सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
www.newsparivahan.com
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 33, नई दिल्ली । रविवार, 13 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आप सभी को बैसाखी की लख-लख वधाई...

03 "सालों से जमे गंदगी के ढेर पर चली सफाई की झाड़ू"
06 कामयाबी के लिए जिम्मेदारी से करें इंटर्नशिप
08 चाईबासा के खिलाफ शिक्षको ने निकाला न्याय यात्रा

इंद्रलोक-इंद्रप्रस्थ कॉरिडोर के लिए इंद्रलोक में बनेगा दूसरा नया मेट्रो स्टेशन

संजय बाटला

दिल्ली मेट्रो के फेज चार में इंद्रलोक-इंद्रप्रस्थ कॉरिडोर के लिए इंद्रलोक में दूसरा नया मेट्रो स्टेशन बनेगा। यह ग्रीन लाइन का हिस्सा होगा और वर्तमान स्टेशन के नजदीक ही होगा। नया स्टेशन बनने के बाद वर्तमान स्टेशन को व्यावसायिक गतिविधियों के लिए इस्तेमाल किया जाएगा।

नई दिल्ली। किसी मेट्रो लाइन के विस्तार के लिए जब कोई मेट्रो कॉरिडोर बनता है तो प्रारंभिक स्टेशन के पास उसी मेट्रो लाइन का नया स्टेशन नहीं बनता, लेकिन फेज चार में इंद्रलोक-इंद्रप्रस्थ कॉरिडोर के लिए इंद्रलोक में दूसरा नया मेट्रो स्टेशन बनेगा। यह भी तब जब यह ग्रीन लाइन का हिस्सा है।

पहली बार एक ही मेट्रो लाइन (ग्रीन लाइन) पर वर्तमान स्टेशन के नजदीक ही दूसरा नया मेट्रो स्टेशन बनाने की प्रक्रिया शुरू हुई है। नया स्टेशन तैयार होने और मेट्रो का परिचालन शुरू होने पर इंद्रलोक में ग्रीन लाइन के वर्तमान स्टेशन से मेट्रो ट्रेनों का परिचालन बंद हो जाएगा।

वर्तमान स्टेशन और उसके प्लेटफार्म का इस्तेमाल व्यावसायिक गतिविधियों के लिए मॉल या शॉप के रूप में होगा। अभी इंद्रलोक में ग्रीन लाइन (बहादुरगढ़-इंद्रलोक-कीर्ति नगर) और रेड लाइन (रिठाला-शहीद स्थल न्यू बस अड्डा गाजियाबाद) के स्टेशन पहले से मौजूद हैं।

दोनों स्टेशन आपस में सटे हुए

ये दोनों आपस में इंटरचेंज स्टेशन हैं और दोनों स्टेशन आपस में सटे हुए हैं। अब फेज चार में इंद्रलोक से इंद्रप्रस्थ के बीच 12.377 किलोमीटर का नया कॉरिडोर बनाना है। इसका 1.028 किलोमीटर हिस्सा एलिवेटेड और बाकी हिस्सा भूमिगत होगा।

पिछले वर्ष मार्च में केंद्र सरकार ने इस कॉरिडोर के निर्माण के लिए स्वीकृति दी थी। यह कॉरिडोर वर्तमान ग्रीन लाइन की विस्तार परियोजना है, लेकिन इंद्रलोक में ग्रीन लाइन व रेड लाइन के स्टेशन सटे होने के कारण ग्रीन लाइन के कॉरिडोर को उसे आगे बढ़ाकर निर्माण कर पाना संभव नहीं है।

DMRC ने नए स्टेशन बनाने को लेकर कही ये बात

इसलिए इंद्रलोक के पास वर्तमान ग्रीन कॉरिडोर के डिजाइन में भी परिवर्तन किया जाएगा। यही वजह है कि दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी) ने इंद्रलोक-इंद्रप्रस्थ कॉरिडोर के लिए इंद्रलोक में 117.16 करोड़ रुपये की लागत से नए स्टेशन, एलिवेडेट कॉरिडोर, रैंप व फुट ओवरब्रिज (एफओबी) के निर्माण के लिए टेंडर प्रक्रिया शुरू की है।

डीएमआरसी का कहना है कि मेट्रो परिचालन की जरूरतों को ध्यान में रखकर नया स्टेशन बनाना जरूरी है। बाद में यह नए इंद्रलोक स्टेशन का प्लेटफार्म इंद्रप्रस्थ से मुंडका व बहादुरगढ़ के बीच सीधी मेट्रो सेवा के लिए इस्तेमाल होगा और वर्तमान स्टेशन का प्लेटफार्म संपत्ति विकास के रूप में इस्तेमाल होगा। वर्तमान स्टेशन व नए स्टेशन के कॉनकोर्स एफओबी से जुड़ेंगे।

प्रस्तावित स्टेशन

इंद्रलोक, दयाबस्ती, सराय रोहिल्ला, अजमल खान पार्क, नबी करीम, नई दिल्ली, लोकनायक अस्पताल, दिल्ली गेट, दिल्ली सचिवालय और इंद्रप्रस्थ।

कॉरिडोर पर होंगे पांच ये इंटरचेंज स्टेशन

इंद्रलोक, नबी करीम, नई दिल्ली, दिल्ली गेट और इंद्रप्रस्थ।

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर.एन.आई. द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वीएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला, संपादक

नमो भारत स्टेशन पर जल्द ही पॉड होटल

रेस्टोरेंट, फूड स्टॉल और स्टोर आउटलेट आएंगे नजर

दिल्ली के आनंद विहार और न्यू अशोक नगर नमो भारत स्टेशनों पर जल्द ही यात्रियों के लिए पॉड होटल रेस्टोरेंट और स्टोर खुलेंगे। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए जगह को 20 साल के लिए लीज पर देगा। इस पहल से यात्रियों को सुविधा मिलेगी और एनसीआरटीसी की आय भी बढ़ेगी। इसके लिए आवेदन मांगने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है।

दिल्ली। आनंद विहार और न्यू अशोक नगर में नमो भारत स्टेशन पर जल्द पॉड होटल, रेस्टोरेंट, फूड स्टॉल और स्टोर आउटलेट नजर आएंगे। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) इन दोनों स्टेशनों पर व्यावसायिक उद्देश्य के लिए खाली जगह 20 वर्षों की लीज पर देने जा रहा है। इसके लिए आवेदन मांगने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। इससे नमो भारत ट्रेन के यात्रियों को सुविधा होगी, साथ ही एनसीआरटीसी को आय अर्जित होगी।

आनंद विहार स्टेशन पर चार हजार वर्ग मीटर जगह व्यावसायिक गतिविधि के लिए लीज पर देने को चिह्नित की गई है। यह जगह स्टेशन परिसर के अंदर विभिन्न स्तरों पर हैं। इसमें प्लेटफार्म स्तर पर लगभग 1821 वर्ग मीटर, मध्य फ्लोर पर लगभग 458 वर्ग मीटर, कॉनकोर्स लेवल पर लगभग 922 वर्ग मीटर और पार्किंग के पास 864 वर्ग मीटर क्षेत्र लीज पर दिया जाएगा। वहीं न्यू अशोक नगर नमो भारत स्टेशन पर लगभग 2325 वर्ग मीटर जगह इस काम के लिए चिह्नित है। अभी इन स्टेशनों पर 30 से 45 हजार यात्रियों का प्रतिदिन आना जाना होता है।

पांच वर्ष तक लीज विस्तार गुंजाइश

दोनों स्टेशनों पर व्यावसायिक गतिविधि के लिए जगह 20 वर्ष की लीज पर दी जाएगी। इतना वक्त निकलने के बाद पांच वर्ष लीज विस्तार का विकल्प भी दिया जाएगा। उसके लिए एनसीआरटीसी की शर्तों को पूरा करना होगा।

मेक इन इंडिया को करना होगा प्रोत्साहित

मेक इन इंडिया को प्रोत्साहित करना लीज की शर्तों में शामिल है। एनसीआरटीसी ने साफ किया है कि इस धारणा को प्रोत्साहित करने से देशी उत्पादों को बढ़ावा मिलेगा। ऐसे उत्पादों को उत्पादन बढ़ेगा और रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।

ऐसे होते हैं पॉड होटल

यह काम बजट में ठहरने का स्थान होता है। इसमें एक कमरे में छोटे आकार के अलग-अलग कई कंपार्टमेंट होते हैं। प्रत्येक में एक-एक बेड होता है। शौचालय की सुविधा होटल परिसर में होती है।

दोनों स्टेशनों पर एनसीआरटीसी द्वारा लगाया गया यात्रियों का अनुमान

वर्ष	न्यू अशोक नगर	आनंद विहार
2031	1.44 लाख	2.73 लाख
2041	1.71 लाख	3.29 लाख
2051	2.36 लाख	4.32 लाख

जल्द ही पुरी से कोणार्क तक ट्रेन चलेगी : रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव पुरी में। उन्होंने मंदिर में दर्शन कर श्रीजी से आशीर्वाद लिया तथा 4.5 करोड़ ओड़िया लोगों की खुशहाली की कामना की। इसके बाद उन्होंने सीधे पुरी रेलवे स्टेशन का दौरा किया और सभी विकास एवं सौंदर्यीकरण कार्यों की समीक्षा एवं निरीक्षण किया।जल्द ही पुरी से कोणार्क तक ट्रेन चलेगी।इसके लिए भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया जारी है। प्रस्तावित नए स्टेशन का दौरा करने के बाद, अश्विनी बैष्णब ने पुरी स्टेशन का दौरा किया और वर्तमान स्टेशन को विश्व स्तरीय स्टेशन बनाने के महत्व पर बल दिया। इस अवसर पर पुरी के सांसद संबित पात्रा और रेलवे विभाग के वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। उन्होंने इसमें कुछ बदलावों पर चर्चा की, जिनमें विशेष योजनाएं और डिजाइन भी शामिल थे। उन्होंने 364 करोड़ रुपये की लागत वाली इस परियोजना को दो वर्षों के भीतर पूरा करने का सुझाव दिया।

दिल्ली के ऑटो चालकों का हल्ला बोल!

नई दिल्ली। सरकार सुन ले, अब और नहीं सहेंगे अन्याय! विरोध का आवाहन, हमारी मांगे, हमारा अधिकारः

1. परमिट की अवधि 15 साल रखो, 10 साल नहीं चलेगा! मुख्य समाचार पत्रों में छपी खबरों से साफ है कि सरकार ऑटो परमिट की अवधि 10 साल करना चाहती है – हम इसका डटकर विरोध करते हैं!
2. सामाजिक सुरक्षा दो – रोजगार मत छीनो! हमने मांगी थी सामाजिक सुरक्षा, सरकार दे रही है बेरोजगारी!
3. परमिट ट्रांसफर में देरी बंद करो! जिन चालकों को परमिट नहीं मिल पा रहा – उनका ऑटो ट्रांसफर तुरंत शुरू करो!
4. स्थायी स्टैंड और फ्री पार्किंग की व्यवस्था करो!हर मॉल, स्कूल, होटल, अस्पताल और सिनेमा हॉल में निशुल्क पार्किंग दो – यह हमारा अधिकार है!

एकजुट होकर आवाज़ बुलंद करो – हक़ की लड़ाई में पीछे मत हटो! "ऑटो चालक एकता ज़िंदाबाद!"

आजाद हिंद ऑटो टैक्सी चालक यूनियन रजि० दिल्ली प्रदेश

भुवनेश्वर रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास कार्य जल्द पूरा होगा: अक्टूबर में होगा उद्घाटन

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : भुवनेश्वर रेलवे स्टेशन के पुनर्विकास का पहला चरण अक्टूबर 2025 तक पूरा होने वाला है। रेल मंत्रालय के अनुसार, पहले चरण का काम अपने निर्धारित समय के भीतर पूरा होने की राह पर है।पूर्व की ओर, जो कटक रोड की ओर है, डिजाइन को तीन मंजिलों तक विकसित करने के लिए पूरी तरह से तैयार कर लिया गया है।इस बीच, मास्टर कैंटीन क्षेत्र के पास पश्चिम की ओर, ग्यारह मंजिला इमारत की चौथी मंजिल तक निर्माण कार्य पहुंच चुका है। आंतरिक कार्य अब तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। पूरी परियोजना पर 398 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। स्टेशन पर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों जैसी सुविधाएं उपलब्ध होंगी, जिनमें प्लेटफार्म स्तर से ऊपर 108 मीटर लम्बा हवाई अड्डा भी शामिल है। यह कॉनकोर्स स्टेशन के पूर्व और पश्चिम हिस्सों के बीच संपर्क को बढ़ाएगा, तथा छत का निर्माण कार्य तीव्र गति से चल रहा है।

पूरा हो जाने पर, यह भवन 1,000 से अधिक यात्रियों के लिए उपयुक्त होगा तथा इसमें लाउंज और बैठने की जगह भी होगी। स्टेशन के पुनर्निर्माण में दोनों ओर अलग-अलग प्रवेश और निकास द्वार शामिल होंगे, और उम्मीद है कि यह प्रतिदिन 100,000 यात्रियों को सेवा प्रदान करेगा, जो वर्तमान क्षमता लगभग 77,000 से अधिक है।

चौड़ा फुट ओवरब्रिज प्लेटफार्मों के बीच पैदल यात्रियों की आसान और सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करेगा। भुवनेश्वर विकास प्राधिकरण (बीडीए) ने मास्टर कैंटीन के पास एक एलिवेटेड ड्राइव और पहुंच मार्ग के निर्माण को मंजूरी दे दी है, जिसका आधार कार्य बीडीए द्वारा आवंटित भूमि का उपयोग करके पहले ही शुरू हो चुका है। ईस्ट कोस्ट रेलवे, बीडीए के साथ मिलकर पुनर्विकास का कार्य कर रहा है, जिसमें वाणिज्यिक और पार्किंग सुविधाओं का एकीकरण भी शामिल है। यह सहयोगात्मक प्रयास वाणिज्यिक विकास के लिए उपलब्ध भूमि के उपयोग को अनुकूलतम बनाएगा। स्टेशन की प्रमुख विशेषताओं में आधुनिक संरचना, हवाई अड्डे की शैली का यात्री टर्मिनल, आपस में जुड़ा हुआ एयर कॉन्कोर्स और विकलांग लोगों के लिए सुविधाएं शामिल हैं। इसमें 34 लिफ्ट और 20 एस्केलेटर होंगे, साथ ही सामान जांच, सूचना कियोस्क, फूड प्लाजा और प्रतीक्षा लाउंज जैसी अतिरिक्त सुविधाएं भी होंगी। उन्नत सुरक्षा उपायों में सीसीटीवी निगरानी, सामान स्कैनर और इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग स्टेशन शामिल होंगे। परियोजना के दूसरे चरण में पश्चिमी भवन के लिए सात अतिरिक्त मंजिलों की योजना बनाई गई है, जो भुवनेश्वर रेलवे स्टेशन को एक नई पहचान प्रदान करेगी।

ग्रहों के सरल उपाय जो आपकी जिन्दगी में सकारात्मक प्रभाव डालेंगे

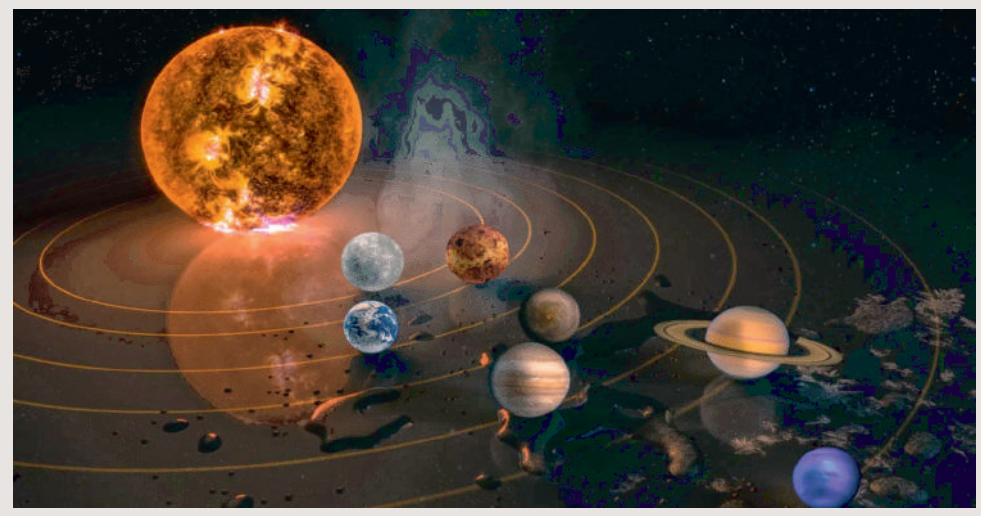

१- यदि कुंडली में सूर्य बुरा प्रभाव डाल रहा है तो पलंग के नीचे तांबे के पात्र में जल या तकिए के नीचे लाल चंदन रखें।
२- चंद्र के कारण जीवन में परेशानी आ रही हो तो पलंग के नीचे चांदी के बर्तन में जल रखें या चांदी के आभूषण धारण करें।
- यदि मंगल से संतप्त हों तो पलंग के नीचे कांसे के बर्तन में जल रखें या सोने-चांदी मिश्रित आभूषण तकिए के नीचे रखें।
४- बुध की वजह से जीवन में परेशानी हो तो तकिए के नीचे सोने के आभूषण रखें।
५- यदि गुरु के कारण उन्नति में व्यवधान आ रहा हो तो पलंग के नीचे पीतल के बर्तन में जल रखें या हल्दी की गांठ पीले कपड़े में बांधकर तकिए के नीचे रखें।
६- शुक्र के कारण समस्याएं आ रही हों तो चांदी की मछली बनाकर तकिए के नीचे रखें या पलंग के नीचे चांदी के पात्र में जल रखें।
७- शनि से संतप्त हों तो लोहे के पात्र में पलंग के नीचे जल रखें या तकिए के नीचे लोहा या नीलम रखें।
८- यदि राहु की कोई समस्या है, तनाव बहुत है, क्रोध बहुत आ रहा, काम कुछ बन नहीं रहा तो बुधवार की रात्रि को एक नारियल सर के पास रख कर सोये और अगले दिन वह नारियल गणेश जी के मंदिर में कुछ दक्षिणा के साथ अर्पित कर दें तथा विघ्नहर्ता गणेश स्तोत्र का पाठ करें। सब अमंगल दूर होकर मंगल ही मंगल हो जाएगा।
९- शनिवार के दिन एक जालदार जटा वाला नारियल ले और बहते जल में काले वस्त्र में लपेटकर 100 ग्राम काले तिल, जो, उरद की दाल एक कील के साथ शनिवार को प्रवाहित कर दें।
१०- शनि, राहु, केतु जनित या कोई और ऊपरी बाधा होगी तो उतर जाएगी। मंगलवार को एक नारियल सवा मीटर लाल वस्त्र में लपेटकर अपने ऊपर से साथ बार उतार कर हनुमान जी के चरणों में रख दें। किसी भी प्रकार की बाधा, नज़र दोष, ज्वर होगा उतर जाएगा।
११- यदि आर्थिक समस्या से घिर गए है तो लगातार आठ मंगलवार हनुमान जी के मंदिर एक नारियल ले कर जाये उसके सिंदूर से स्वस्तिक बनाये हनुमान जी को अर्पित कर वहां बैठ कर ऋणमोचक मंगल स्तोत्र का पाठ करे शीघ्रही लाभ होगा। यदि कुंडली में शनि, मंगल, राहु, केतु शुभ स्थिति में नहीं है या इनकी अशुभ दशा चल रही हो तो शनिवार को एक सुखा मेवे वाला नारियल लाये ऊपर एक छोटा सा मुख बना कर उसके थोडा सा मेवा और चीनी का बुरा (शक्कर) भरकर किसी पीपल के पेड़ के नीचे एक गड्ढा खोद कर उसे दबा दें और वापिस चले आएं।
१२- यदि व्यापार में निरंतर हानि हो और रुकने का नाम न ले तो गुरूवार के दिन एक नारियल ले कर सवा मीटर पीले वस्त्र में लपेटे, एक जोड़ा जनेऊ, सवा पाव पीले मिष्ठान के साथ किसी विष्णु मंदिर में हानि रोकने के प्रार्थना व संकल्प के साथ रख आएं। तत्काल हानि समाप्त हो कर लाभ प्रारंभ हो जाएगा।
१ - यदि धन का संचय नहीं है, परिवार की आर्थिक दशा को लेकर चिंता है तो शुक्रवार के दिन मां लक्ष्मी के मंदिर जाएं माता के चरण में एक जटा वाला नारियल, गुलाब या कमल के पुष्प अथवा माला, एक सवा-सवा मीटर गुलाबी और सफ़ेद वस्त्र, सवा पांव, चावल, दही, सफ़ेद मिष्ठान, एक जोड़ा जनेऊ एक साथ मां को भेट अर्पित कर माता की कपूर व देसी घी से आरती करें या करवाए तथा अपने मन की व्यथा माता के समक्ष कहें, शीघ्रही आर्थिक पक्ष मजबूत होगा।
१४- यदि आप किसी गंभीर आपत्ति विपत्ति में घिर गए हों और कोई मार्ग न दिखाई दे तो दो नारियल और एक चुनरी, कपूर, अड़हुल के पुष्प की माला लेकर देवी दुर्गा के मंदिर जाएं, एक नारियल चुनरी के साथ मां को अर्पित करें माला से मां का श्रृंगार कराकर मां को कुछ मिष्ठान का भोग अर्पित कर कर्पुर से आरती करें फिर एक बचे हुए नारियल को ₹ हुं फट ₹ के उच्चारण के साथ मां के समक्ष बलि दे अर्थात नारियल तोड़ से। सभी बाधा आपसे दूर होगी।

मां चामुंडा का यह मंत्र जिसमें मां शक्ति समाती है हर प्रकार की चिंता, बाधा इसे जपने से ही मिट जाती है

मां चामुंडा के मंत्र का जाप करने वाले को ना कोई चिंता और ना ही कोई बाधा परेशान कर सकती हैं और ना हीं साधक का कोई बाल भी बांका कर सकता है। सुमिरे इस मंत्र को सच्चे मन से *₹₹ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे₹₹

ॐ -ईश्वर के निर्गुण तत्त्व से संबंधित है,

ऐं = सरस्वती का बीज मन्त्र है,

ह्रीं = महालक्ष्मी का बीज मन्त्र है,

क्लीं = महाकाली का बीज मन्त्र है,

चामुंडायै विच्चे शक्तिमाता कुष्मांडा, माँ स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी, माता सिद्धीदात्री नौ अक्षर वाले इस अद्भुत नवार्ण मंत्र में देवी दुर्गा की नौ शक्तियां समायी हुई है, जिसका सम्बन्ध नौ ग्रहों से भी है

मंत्र शब्दों का संचय होता है जिससे इष्ट को प्राप्त कर सकते हैं और अनिष्ट बाधाओं को नष्ट कर सकते हैं। मंत्र के शब्द में 'मन्' का तात्पर्य मन और मनन से है और 'त्र' का तात्पर्य शक्ति और रक्षा से है

मंत्र का अर्थ है अक्षर, नाद, शब्द अथवा शब्दों का समूह जो आत्मज्ञान अथवा ईश्वरीय स्वरूप का प्रतीक है मंत्रजप से स्व-रक्षा अथवा विशिष्ट उद्देश्य साध्य करना संभव होता है मंत्र को दोहराते समय विधि, निषेध तथा नियमों का विशेष पालन करना आवश्यक है यह मंत्र तथा मंत्र साधना (मंत्रयोग) का महत्त्वपूर्ण अंग है

जयकारा मां शेरावाली जी दी, बोल सच्चे दरबार की जय

एक ही गलती बार-बार क्यों हो जाती है?

गलती करना यह होता है लोभ के वशीभूत होने से, मोह होने से, क्रोध और कामना-वासना के उपजने से। सभी लोग इन कामों का तिरस्कार करते हैं, लेकिन कोई भी यह नहीं बताता कि इन्हें ठीक कैसे किया जाए? यदि ठीक न हो सके तो इन को नियंत्रित-नियमित कैसे किया जाए?

जीवन में बार-बार गलतियाँ क्यों होती है? गलती न करने का संकल्प लेकर भी वही गलती क्यों हो जाया करती है? इसके साथ ऐसा कौन सा महाबल जुड़ा है कि यह सब को अपने प्रवाह में जोड़ लेता है और इन्सान विवश खड़ा फिर से अपने किए हुए पर पश्चाताप करने लगता है। हमारे सारे प्रयास-पुरुषार्थ धरे के धरे रह जाते हैं और हम कुछ भी नहीं कर पाते। यह महा प्रश्न हम सभी के जीवन में उत्तर की तलाश में खड़ा रहता है, लेकिन ऐसा भी नहीं है कि इन गलतियों को सुधारा न जा सके। इन्हें सुधारने के लिए आवश्यक है इनके मूल तक पहुँचना, इनकी तह तक जाना, जहाँ से ये पैदा होती हैं, उस बल को पहचानना जिससे इनकी तीव्रता बढ़ती है। सभी प्रकार की गलतियों की जड़ चेतन मन में दबी-छिपी रहती है। चेतन के परिष्कार और परिमार्जन करने से ही गलतियों की पुनरावृत्ति को रोका जा सकता है। यदि किसी को अपनी गलतियों से पूरी तरह छुटकारा पाना हो तो उन की गई गलतियों पर चिन्तन करने की अपेक्षा उनकी जड़ के निराकरण पर ध्यान देना चाहिए और यह निराकरण तभी संभव है, जब जड़ को पूरी तरह नष्ट किया जाए।

- गोंद कतीरा-

50 की उम्र में दिखना है 30 का तो दूध में इसे डालकर पीना कर दें शुरू, इससे कमजोरी/आलस होगा समाप्त, गोंद कतीरा के फायदे हम सब जानते हैं, कि दूध हमारे शरीर के लिए सबसे अच्छा पोष्टिक द्रव्य है। आज हम आपको दूध के साथ गोंद कतीरा (ट्रैगेकेन्थ गम) के उपयोग बता रहे हैं। गोंद कतीरा एक स्वादहीन, गंधहीन, घियपिया और पानी में घुलने वाला प्राकृतिक गोंद है। गोंद कतीरा का उपयोग गर्भियों में अच्छा रहता है क्योंकि इसमें ठंडक रहती है। जिससे शरीर में ताकत आती है और पेशाब संबंधी बीमारियों के लिए यह दवाई की तरह काम करता है। गोंद कतीरा शरीर से निकलने वाले खून की रोकथाम करता है। इसके अलावा उल्टी, माइग्रेन, थकान और कमजोरी में बहुत फायदेमंद है। इसके अलावा सिर के बालों को झड़ने से रोकता है। यह पेड़ से निकलने वाला गोंद है। इसका कांटेदार पेड़ भारत में गर्म पथरीले क्षेत्रों में पाया जाता है। इसकी छाल काटने और टहनियों से जो तरल निकलता है वही जम कर सफेद पीला हो जाता है यही गोंद कतीरा होता है। इसमें भरपूर मात्रा में प्रोटीन और फॉलिक एसिड जैसे पोषक तत्व पाए जाते है जो हमारे शरीर से जुड़ी कई समस्याओं से राहत दिलाने में मदद करते हैं। इसके सेवन करने से गर्भियों में लू से बचा जा सकता है साथ ही साथ हम कई कई रोगों से भी निजात पा सकते हैं। गोंद कतीरा का उपयोग कई प्रकार से किया जाता है जैसे दूध, आईसक्रीम और शरबत आदि में। आइए जानते हैं जानते हैं इसके सेवन से स्वास्थ्य को होने वाले फायदों के बारे मे

1. हाथ-पैरों में जलन (Gond Katira For Jalan) अगर हाथ-पैरों में जलन की समस्या हो तो १ चम्मच गोंद कतीरा को रात को 1 गिलास पानी में भिगों दें, सुबह इसमें शक्कर मिला कर खाने से राहत मिलती है।
१. एंटी-एजिंग (Gond Katira For Anti Ageing) गोंद कतीरा आपकी त्वचा के लिए बहुत फायदेमंद है और यह आपकी सुंदरता को बढ़ाता है गोंद कतीरा में एंटी-एजिंग गुण होते हैं ,जो झुर्रियों जैसी समस्या को दूर करता है।
3. कमजोरी और थकान से छुटकारा (Gond Katira For Weakness) हर रोज सुबह आधा गिलास दूध में कतीरा गोंद और मिश्री डाल कर पीने से कमजोरी और थकान से छुटकारा मिलता है।
4. माइग्रेन, थकान, कमजोरी, गर्मी की वजह से चक्कर आना, उल्टी (Gond Katira For Migraine, Weakness, Vomitting) गोंद कतीरा के सेवन से माइग्रेन, थकान, कमजोरी, गर्मी की वजह से चक्कर आना, उल्टी आने पर आराम मिलता है।
5. टांसिल (Gond Katira For Tonsil) अगर आपको बार बार टांसिल की समस्या होती है तो १ चम्मच गोंद कतीरा में धनिया के पत्तों के रस में मिलाकर रोजाना गले पर लेप करने से यह पूरी तरह से ठीक हो जाते हैं।
6. अल्सर (Gond Katira For Ulcer) यह मुंह के अल्सर को ठीक करने में भी मदद करता है।
7. पसीना ज्यादा आना (Gond Katira For Sweating) जिन लोगों को पसीना ज्यादा आता हो, उन्हें गोद कतीरा का सेवन करने से यह समस्या दूर हो जाती है।
8. 10-२० ग्राम गोंद कतीरा पानी में भिगोकर सुबह शरबत बनाकर पीने से रक्त संबंधी बीमारियां दूर हो जाती है।
9. गोंद कतीरा को मिश्री के साथ पीसकर दो चम्मच कच्चे दूध के साथ सेवन करने से स्त्री रोग जैसे महामारी, ल्यूकेमिया, भाँ बनने के बाद की कमजोरी में फायदा होता है।

हनुमान जी का मंदिर जहां स्त्री रूप में पूजा जाता है...

पवन पुत्र व राम भक्त हनुमान को युगों से लोग पूजते आ रहे हैं। उन्हें बाल ब्रह्मचारी भी कहा जाता है जिस कारण स्त्रियों को उनकी मूर्ति को छूने से भी मना किया जाता है। देवता रुप में मंदिरों में पूजे जाते हैं लेकिन एक ऐसा मंदिर है जहां पर हनुमान को पुरुष नहीं बल्कि स्त्री के रूप में पूजा जाता है। है ना अद्भुत, हनुमान जी को स्त्री स्वरूप में देखा और पूजा जाना। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में प्रसिद्ध एक प्रचीन मंदिर है जहां पर हनुमान जी के स्त्री के रुप के पीछे छिपी दस हजार साल पुरानी एक कथा प्रचलित है।

कहां है ये मंदिर यह मंदिर छत्तीसगढ़ के बिलासपुर जिले से १५ कि. मी. दूर रतनपुर में है। कहा जाता है कि यह एक महत्वपूर्ण जगह है जो काफी महान है। इतना ही नहीं, इस नगरी को महामाया नगरी भी कहा जाता है क्योंकि यहां पर मां महामाया देवी मंदिर और गिरजाबंध में स्थित हनुमानजी का मंदिर है। इस छोटी सी नगरी में स्थित हनुमान जी का यह विश्व में इकलौता ऐसा मंदिर है जहां हनुमान का नारी रुप में पूजन किया जाता है। स्थानीय लोगों का कहना है कि इस मंदिर में आने वाला हर एक भक्त हजारों मन्नतें लेकर आता है और इस स्थान से वो कभी भी निराश होकर नहीं लौटता है। लोगों की श्रद्धा व भावना से भरपूर इस मंदिर में हर समय लोगों का आना-जाना लगा रहता है।

कहा जाता है कि हनुमान का स्त्री रुप में यहां पूजा जाना एक कथा का परिणाम है जो हजारों वर्षों पुरानी है। तकरीबन दस हजार वर्ष पुरानी बात है, जब एक दिन रतनपुर के राजा पृथ्वी देवजू जिन्हें एक शारीरिक कोढ़ था और इस रोग के कारण काफी उदास हो गए थे। इस रोग की वजह से वे ना तो कोई काम कर सकते थे और ना ही जिंदगी का आनंद उठा सकते थे उदासी में बैठे-बैठे राजा को नींद आ गई। नींद के दौरान उन्होंने एक सपना देखा जिसमें उन्हें एक ऐसे रुप के दर्शन हुए जो वास्तव में था ही नहीं "उन्होंने संकटमोचन हनुमान को देखा लेकिन स्त्री रुप में" उस मूर्ति में हनुमान जी लंगूर की भांति दिख रहे थे लेकिन पूंछ नहीं थी। उनके एक हाथ में लड्डू से भरी थाली और दूसरे हाथ में राम मुद्रा थी। कानों में भव्य कुंडल व माथे पर सुंदर मुकुट माला भी थी। उनका

यह दृश्य देख राजा अचंभित हो उठा। सपने में हनुमान के स्त्री रुप ने राजा से एक बात कही। हनुमान ने राजा से कहा कि "हे राजन्मैं तेरी भक्ति से अत्यंत प्रसन्न हूं और मैं तुम्हारा कष्ट अवश्य दूर करूंगा तू एक मंदिर का निर्माण करवा और उसमें मुझे बैठा और मंदिर के पीछे एक तालाब खुदवा जिसमें मेरी विधिवत पूजा करते हुए तू स्नान करना इससे तुम्हारे शरीर का यह कोढ़ रोग आवश्य दूर हो जाएगा." नींद खुलते ही राजा ने गिरजाबन्ध में मंदिर बनवाना शुरु कर दिया जैसा कि हनुमान ने उसके सपने में बताया था लेकिन मंदिर पूरा होते ही राजा को उसमें रखने के लिए मूर्ति की चिंता सताने लगी। संकटमोचन हनुमान ने दोबारा से राजा के स्वप्न में आकर कहा कि "मां महामाया के कुण्ड में मेरी मूर्ति रखी हुई है जहां लोग स्नान करते हैं, "राजन् तू मूर्ति को यहां लाकर मंदिर में स्थापित करवा" । राजा ने वह मूर्ति खोजी तो यह वही मूर्ति थी जिसे राजा ने अपने स्वप्न में देखा था. अद्भुत तेज है मूर्ति में राजा को मिली मूर्ति में अनेक विशेषताएं हैं, इसका मुख दक्षिण की ओर है और साथ ही मूर्ति में पाताल लोक का चित्रण है। मूर्ति में हनुमान जी को रावण के पुत्र अहिरावण का संहार करते हुए दर्शाया गया है और हनुमान जी के बाएं पैर के नीचे अहिरावण और दाएं पैर के नीचे कसाई दबा हुआ है। हनुमान जी के कंधों पर भगवान राम और लक्ष्मण की झलक है। हनुमान जी के एक हाथ में माला और दूसरे हाथ में लड्डू से भरी थाली है। मूर्ति को पाते ही राजा प्रसन्न हो उठा और जल्द से जल्द उसकी स्थापना मंदिर में करवाई। हनुमान जी के निर्देश अनुसार इस मंदिर के पीछे तालाब भी खुदवाया गया। प्रसन्नता भरे राजा ने हनुमान जी से वरदान मांगा की जो भी यहां दर्शन को आए उसकी हर इच्छा अवश्य पूरी हो। विश्वस्त सूत्रों की माने तो छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर से लगभग 84 किलोमीटर दूर रमई पाट में भी एक ऐसी ही मूर्ति स्थापित है।

आज से शुरू होगा वैशाख का महीना

करें दान-पुण्य, मिलेगा विशेष लाभ। हिंदू कैलेंडर में वैशाख मास साल का दूसरा महीना होता है, जो कि चैत्र माह के बाद आता है. वैशाख का महीना हिंदू धर्म में विशेष महत्व वाला माना गया है, जो कि सबसे पवित्र और शुभ महीनों में से एक है. इस माह में भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी की पूजा अर्चना करने का विधान है। धार्मिक मान्यता है वैशाख मास में पवित्र नदियों में स्नान करने से सभी पाप धुल जाते हैं. इसे जगत के पालनहार भगवान विष्णु का प्रिय मास माना जाता है. इसका एक नाम माधव मास भी है और इसमें श्रीकृष्ण की पूजा करनी शुभ मानी जाती है।

इस साल वैशाख मास कब से कब तक? वैशाख माह के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि 12 अप्रैल को सुबह 5:52 मिनट से शुरू होगी और इस तिथि का समाप्ति 14 अप्रैल को सुबह 8:25 मिनट पर होगी। ऐसे में उदया तिथि के अनुसार, 13 अप्रैल से वैशाख माह की शुरुआत होगी।

वैशाख के महीने में क्या करना चाहिए? वैशाख महीने में राहगीरों को जल पिलाना और प्याऊ लगवाना बहुत पुण्यदायी माना गया है. वैशाख महीने में पशु-पक्षियों को दाना-पानी रखना भी शुभ माना जाता है. साथ ही, इस महीने में जल का दान महादान माना गया है.

वैशाख के महीने में इन कार्यों को करने से जीवन की सारी परेशानियां दूर हो जाती हैं और जीवन में सुख-समृद्धि आती है. वैशाख महीने में फल का दान भी करना चाहिए. इसके अलावा, वैशाख मास में जूते-चप्पल, छाते, मटके, शरबत का दान भी करना चाहिए। वैशाख माह का संबंध विशाखा नक्षत्र से माना गया है, इसलिए इस महीने को वैशाख के नाम से जानते हैं. वैशाखा नक्षत्र के स्वामी देवगुरु बृहस्पति देव हैं. यही वजह है इस महीने में स्नान-दान, व्रत और पूजा-पाठ करना बहुत शुभ माना गया है.

होश रहे कि उत्साह से भरे, अनमोल वचन कुछ दे या ना दे, पर आदरभाव और संस्कार जरूर दे सकते हैं

अपने आप को समाज में स्थापित करने के लिए, कोई हमारे पीछे कुछ भी कहता हो, लेकिन जब कभी वह अकेला अपने भीतर मनन करें तो हमारी उत्साहित करने वाली थपकी/ओज भरे शब्द उसे जीवन के प्रति उत्प्रेरणा जगाने वाले प्रतीत हों। यह नींद भी बड़े अजीब नखरे दिखाती हैं, जब आ जाती है तो सब कुछ भुला देती है और जब नहीं आती तो भूला हुआ सब कुछ याद करा देती है और जागने के लिए बेचैन कर देती है। जिस तरह से मिट्टी का गीलापन पेड़ की जड़ को पकड़कर रखता है ठीक वैसे ही मनुष्य का मधुर व्यवहार ही रिश्तों को पकड़ कर रख पाता है। ध्यान रहे कि जीवन जीने का एक विशेष उद्देश्य और अपने आप पर एक विश्वास की आवश्यकता है कि जीवन में खुशियों की कोई कमी नहीं है, बस हमें उसे जीने का एक अलग अंदाज सीखना है। दूसरों से ज्यादा उम्मीदें न पालें क्योंकि हम कितना भी साफ़/सुथरा/सही/उपयुक्त काम ही क्यों न करतें हों, लोग वहीं सोचेंगे/देखेंगें/बोलेंगें जो उनके मन में होगा।

बच्चों से बड़ों तक सबके लिए फायदेमंद है वंशलोचन (तबाशीर)

वंशलोचन क्या है

वंसलोचन बांस की कुछ नस्लों की जोड़ों से मिलने वाला एक पारभासी (ट्रांसलूसेन्ट) सफ़ेद पदार्थ होता है। यह मुख्य रुप से सिलिका और पानी और कम मात्रा में खार (पोटैश) और चूने का बना होता है। वंशलोचन (Banslochan) बांस के पेड़ की एक किस्म से बनता है। दरअसल, ये बांस का एक तना होता है जो कुछ पर्तियों के साथ बाहर से सख्त और अंदर से नरम होता है। वंशलोचन या ताबाशीर दिखने में एक सफेद पदार्थ की तरह दिखता है, जो मुख्य रुप से सिलिका और पानी से बना होता है, जिसमें चूने और पोटाश के निशान होते हैं, जो बांस की कुछ प्रजातियों से निकलते हैं। वंशलोचन का कोई स्वाद नहीं होता है। लेकिन ये जीभ पर लगाते ही पानी सोख लेता है। यह गंधहीन होता है और इसकी शेल्फ लाइफ एक वर्ष से अधिक होती है। वंशलोचन की खास बात ये है कि ये औषधीय गुणों से भरपूर है और बड़े से लेकर बच्चों तक सबके लिए फायदेमंद है। आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा प्रणालियों की दवा-सूचियों में इसका अहम स्थान है। पारम्परिक चीनी चिकित्सा के कई नुस्ख़ों में भी इसका प्रयोग होता है।

वंशलोचन के लाभ वंशलोचन की खास बात यह है कि इसमें सिलिकॉन डाइऑक्साइड है, जो हड्डियों, जोड़ों, टेंडन और त्वचा के लिए बहुत फायदेमंद होता। वंशलोचन के सेवन से शरीर के ऊतकों का पूरी तरह से विकास होता है। आयुर्वेद के अनुसार ये इम्यूनो-मॉड्यूलेटर की तरह काम करता है जो कि इम्यून सिस्टम को बेहतर बनाने में मदद करता है। इस तरह ये रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है, मौसमी बीमारियों से बचाने में मदद करता है। इसके अलावा इसमें कुछ खास गुण होते हैं, जैसे कि

- कैल्शियम
- आयरन से भरपूर
- एंटी इंफ्लेमेटरी
- इम्यूनिटी बूस्टर
- एंटासिड
- गठिया रोधी
- एंटी बैक्टीरियल

1. हड्डियों को मजबूत बनाता है - वंशलोचन में कैल्शियम की मात्रा बहुत ज्यादा होती है जो कि हड्डियों को मजबूत बनाता है। इसे अगर आप प्रेग्नेंसी के समय खाएं तो, आपके बच्चे की हड्डियों का विकास होता है। बड़े बच्चों को खिलाएं तो उनकी हड्डियां मजबूत होती है और बढ़ती उम्र में खाएं तो ये हड्डियों का मजबूत बनाता है और जोड़ों के दर्द, गठिया और ऑस्टियोआर्थराइटिस जैसी समस्याओं से बचाता है। ऐसे में आप वंशलोचन को दूध में मिला कर पी सकते हैं।
१. पित शांत करता है - वंशलोचन ठंडी तासीर वाला होता है इसलिए जिन लोगों को मथ पैर में जलन और हाथ से पसीने निकले की परेशानी होती है उनके लिए भी वंशलोचन का सेवन फायदेमंद है। ये पित को शांत करता है और शरीर के बाकी दोष जैसे कि वात, पित और कफ में संतुलन बनाए रखने में मदद करता है। इसके लिए आपको वंशलोचन के पानी का नियमित रुप से सेवन करना होगा।
3. पेट में सूजन को कम करता है - पेट में सूजन के पीछे कई कारण हो सकते हैं जैसे कि पेप्टिक अल्सर, अल्सरेटिव कोलाइटिस और क्रोहन रोग आदि। इन सब में पेट का अस्तर प्रभावित होने लगता है और पेट में सूजन आ जाती है। ऐसे में गुलेठी के साथ वंशलोचन लेने से आपको फायदा मिल सकता है।
4. मुंह के छालों को दूर करता है - जिन लोगों को मुंह में छाले की समस्या हर कुछ दिनों पर हो जाती है उन्हें वंशलोचन को शहद में मिला कर इसका सेवन करना चाहिए। दरअसल मुंह के छाले पेट की गर्मी बढ़ जाने के कारण होने लगते हैं। साथ ही जिन लोगों का पित ज्यादा होता है उनमें भी ये परेशानी ज्यादा होती है। तो वंशलोचन पेट की गर्मी को शांत करता है और शहद का एंटीबैक्टीरियल गुण माउथ इंफेक्शन को कम करता है और मुंह के छालों को ठीक करने में मदद करता है।
5. शरीर को डिटॉक्स करता है - वंशलोचन शरीर को डिटॉक्स करता है और शरीर के सभी अंगों के काम काज को बेहतर बनाने में मदद करता है। ये शरीर के विषाक्त पदार्थों को दूर करता है और आंतों की सफाई में मददगार होता है। इसके अलावा वंशलोचन मेटाबोलिज्म को तेज करने में भी मददगार है जो कि खाने-पीने के फंक्शन को सही करने में मदद करता है।
6. बालों के विकास में मददगार - वंशलोचन बालों के विकास को प्रोत्साहित करता है और बालों को मजबूत करता है। यह प्रभाव इसमें प्राकृतिक सिलिका सामग्री के कारण होता है। इसमें मौजूद सिलिका बालों को पतला होने और बालों को झड़ने से रोकता है। इसका रेगुलर सेवन करने से स्कैल्प में ब्लड सर्कुलेशन सही रहता है और बालों की जड़ें मजबूत रहती हैं और बाल तेजी से बढ़ते हैं।
7. एसिडिटी की समस्या को दूर करता है - एसिडिटी पेट में ज्यादा एसिड प्रोडक्शन होने की वजह से होता है। ऐसे में वंशलोचन आपकी काफी मदद कर सकता है। सुबह खाली पेट वंशलोचन का सेवन करने से एसिडिटी की समस्या को कम किया जा सकता है। साथ ही जिन लोगों को कब्ज की दिक्कत होती है उन लोगो के लिए भी वंशलोचन बहुत फायदेमंद है।
8. बच्चों में मिट्टी खाने की आदत को दूर करता है - कुछ बच्चों को मिट्टी खाने की आदत होती है और आसानी से जाती नहीं। ऐसे में इस आदत को दूर करने में वंशलोचन आपकी मदद कर सकता है। ऐसे में वंशलोचन को पीस लें और शहद में मिला कर इसकी गोलियां बना कर बच्चों को दें। इससे बच्चों में कैल्शियम की कमी दूर हो जाएगी और मिट्टी खाने की उनकी आदत ही चली जाएगी।
9. महिलाओं के लिए फायदेमंद - वंशलोचन महिलाओं के लिए बहुत फायदेमंद है। ये पीरियड्स के क्रैम्प्स को कम करने में मदद करता है और शरीर में खून की कमी भी नहीं होने देता। साथ ही जिन महिलाओं में आयरन की कमी होती है उनके लिए भी वंशलोचन बहुत फायदेमंद है। ये उन्हें एनीमिया के लक्षण को कम करने में मदद करता है।
10. चेहरे की रंगत निखारता है - वंशलोचन चेहरे की रंगत निखारता है और आपको गोरा होने में मदद करता है। दरअसल ऐसा कहा जाता है कि प्रेग्नेंसी में जो महिलाएं वंशलोचन लेती हैं उनके बच्चे गोरे होते हैं। इसके अलावा वंशलोचन खून साफ करने में मदद करता है, जिससे कील-मुंहासे से छुटकारा मिलता है और रंगत भी साफ होती है।

हनुमान जन्मोत्सव के उपलक्ष्य पर वीरेंद्र सचदेवा और पवन राणा ने प्रदेश कार्यालय में अयोजित भंडारा में प्रसाद वितरण किया

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और वीरेंद्र सचदेवा ने कनॉट प्लेस स्थिति श्री प्राचीन हनुमान मंदिर में दर्शन किए

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली: दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा एवं संगठन महामंत्री पवन राणा ने आज प्रदेश कार्यालय के बाहर हनुमान जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित भंडारे में प्रसाद वितरण किया और दिल्ली की जनता के उत्तम स्वास्थ्य और सुखद जीवन की कामना की। इस मौके पर प्रदेश महामंत्री विष्णु मित्तल, प्रदेश उपाध्यक्ष दिनेश प्रताप सिंह, प्रदेश कोषाध्यक्ष सतीश गर्ग, पूर्वांचल मोर्चा अध्यक्ष संतोष ओझा, चुनाव पदाधिकारी महेन्द्र नागपाल, कार्यालय मंत्री बृजेश राय, सह कार्यालय मंत्री अमित गुप्ता सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे।

दोपहर लगभग 2 बजे दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और वीरेंद्र सचदेवा ने कनॉट प्लेस स्थिति श्री प्राचीन हनुमान मंदिर में श्री हनुमान जी के दर्शन किए और दिल्लीवासियों के उत्तम स्वास्थ्य की कामना की। साथ ही दोनों नेताओं ने मंदिर परिसर से निकलने वाली शोभा यात्रा से पूर्व श्री हनुमान जी की प्रतिमा का अभिषेक किया और दिल्ली वालों के सुख समृद्धि की कामना की।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने देर शाम प्राचीन श्री नरसिंह हनुमान मंदिर, चांदनी चौक द्वारा पिछले 300 सालों से आयोजित शोभा यात्रा में सम्मलित होकर शोभा यात्रा का शुभारंभ किया।

इसके अलावा वीरेन्द्र सचदेवा ने आज दिल्ली में हनुमान जन्मोत्सव के अवसर पर आयोजित लगभग 12

से अधिक कार्यक्रमों में भाग लिया और दिल्लीवालों के सुखद भविष्य के लिए कामना की। आज के कार्यक्रमों में हौस खास विलेज वेलफेयर एंड डेवलपमेंट एसोसिएशन द्वारा आयोजित हनुमान जन्मोत्सव में शामिल होकर भक्ति उमंग और एकता के इस अनुपम आयोजन में शामिल होकर धर्म, संस्कृति और समाज के प्रति एक नए उदाहरण पेश किया।

वीरेन्द्र सचदेवा ने दिल्लीवासियों को हनुमान जन्मोत्सव की बधाई देते हुए कहा कि आज हनुमान जन्मोत्सव पूरे देश में मनाया जा रहा है। जितने भी देश भर में हनुमान मंदिर है सभी में भक्तो की लम्बी लम्बी कतारे लगी हुई है क्योंकि भगवान हनुमान हमेशा से ही सबके आराध्य रहे हैं।

दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा ने कहा दिल्ली कि जनता को प्रभु श्री राम के भक्त हनुमान जी सेवा और साधना के प्रतीक है। हनुमान जी शक्ति के प्रतिक है सेवा के प्रतिक समर्पण के प्रतिक है और दिल्ली भारतीय जनता पार्टी की सरकार भी उसी सेवा और समर्पण में लगी हुई है हमें लगता है कि आने वाले समय में हम दिल्ली को एक विकसित राजधानी बनाने मे सफल होंगे। उन्होंने कहा माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश लगातार प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहा है और आने वाले समय में दिल्ली भी विकसित राजधानी बनेगी।

दर्शनोपरांत मुख्य मंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि प्रभु श्री राम के भक्त श्री हनुमान जी ऐसे सेवक थे जो हर वक्त उनके काम के लिए तत्पर रहते थे। इसलिए अगर दिल्ली का विकास करना है तो हम सब को हनुमान का अंश लाना पड़ेगा ताकि अपनी मातृभूमि की सेवा करने और इसका विकास करने का एक दृढ़ संकल्प मिल सके।

उन्होंने कहा कि दिल्ली में अब लगातार हमें सेवा भाव के साथ काम करना पड़ेगा। भाजपा की सरकार दिल्ली वालों से लिए गए हर वायदों को पूरा करेगी।

दिल्लीवासियों को फिलहाल गर्मी से मिलेगी राहत, अगले हफ्ते से चलेगी लू

राजधानी दिल्ली में शुक्रवार शाम को आई आंधी और बारिश के बाद शनिवार को गर्मी से राहत मिली। अधिकतम तापमान सामान्य से कम रहा लेकिन मौसम विभाग के अनुसार रविवार से तापमान फिर बढ़ेगा और अगले सप्ताह लू चलने की संभावना है। हालांकि अभी तीन दिन लू से राहत रहेगी। वहीं न्यूनतम तापमान 20 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

नईदिल्ली। राजधानी में शुक्रवार शाम को तेज आंधी व वर्षा के कारण शनिवार को तापमान सामान्य से नीचे आ गया। इस वजह से गर्मी राहत रही। दोपहर में तेज धूप खिलने के बावजूद भी अधिकतम तापमान सामान्य से 0.9 डिग्री सेल्सियस कम रहा। मौसम विभाग के अनुसार रविवार से फिर धीरे-धीरे तापमान बढ़ेगा। इससे गर्मी बढ़ेगी। फिर भी अभी तीन दिन लू से राहत रह सकती है। अगले सप्ताह मंगलवार के बाद फिर लू चल सकती है। मौसम विभाग के पश्चिमी विक्षोभ के कारण शनिवार के लिए भी यलो अलर्ट जारी कर 40 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से झोंकेदार हवा और गरज के साथ शाम या रात के वक्त हल्की वर्षा होने का पूर्वानुमान जारी किया था लेकिन रात पौने नौ बजे तक कहीं कोई वर्षा नहीं हुई। हवा की गति भी दस से 15 किलोमीटर प्रति घंटे के बीच रही। रविवार को आकाश में आंशिक बादल छाए रहेंगे।

न्यूनतम तापमान 20 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना

अधिकतम तापमान 37 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 20 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। सोमवार को अधिकतम तापमान 39 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 22 डिग्री सेल्सियस पहुंच सकता है। बुधवार से शुक्रवार तक लू चल सकती है। इस दौरान अधिकतम तापमान 40 से 42 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 22 से 24 डिग्री सेल्सियस पहुंच सकता है।

दिल्ली का अधिकतम तापमान 35.2 डिग्री सेल्सियस

मौसम विभाग के अनुसार शनिवार को दिल्ली का अधिकतम तापमान 35.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जो पिछले दिन के मुकाबले 0.6 डिग्री सेल्सियस कम रहा। वहीं न्यूनतम तापमान में पिछले दिन के मुकाबले 3.8 डिग्री सेल्सियस की गिरावट हुई। इस वजह से न्यूनतम तापमान 19 डिग्री सेल्सियस रहा जो सामान्य से दो डिग्री सेल्सियस कम है। मौसम आद्रता अधिकतम 81 प्रतिशत और न्यूनतम 38 प्रतिशत रहा।

न्यूनतम तापमान 22.8 डिग्री सेल्सियस

इसके एक दिन पहले दिल्ली में अधिकतम तापमान 34.6 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 22.8 डिग्री सेल्सियस था। इसके अलावा शुक्रवार को दिल्ली में 0.7 मिलीमीटर वर्षा हुई थी। कई इलाकों में रात 11:30 से ढाई बजे के बीच भी वर्षा हुई थी। इस दौरान आया नगर में सबसे अधिक चार मिलीमीटर, रिज एरिया में 1.4 मिलीमीटर व लोधी रोड़ में 0.5 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई थी। इसके बाद कहीं वर्षा नहीं हुई।

दिल्ली के इस इलाके से हटाया गया अतिक्रमण, लोगों के विरोध करने पर पुलिस ने किया ये काम

पूर्वी दिल्ली के झिलमिल वार्ड में नगर निगम ने लगातार तीसरे दिन अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की। सोम बाजार रोड पर अतिक्रमण हटाने के दौरान लोगों ने विरोध किया। पुलिस ने हस्तक्षेप कर कार्रवाई जारी रखी। ठेले काउंटर और अन्य सामान जब्त किए गए। झिलमिल में सोम बाजार रोड से हटाया अतिक्रमण के खिलाफ यह अभियान स्थानीय निवासियों की शिकायतों के बाद चलाया गया।

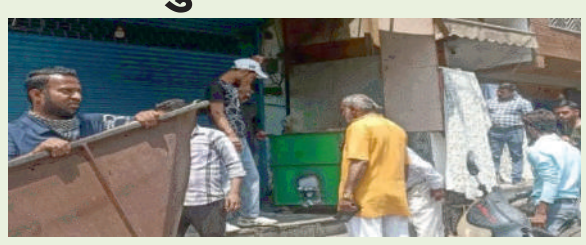

दिल्ली। नगर निगम ने झिलमिल वार्ड में लगातार तीसरे दिन भी अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई जारी रखी। शनिवार को सोम बाजार रोड से अतिक्रमण हटाया गया। इस दौरान लोगों ने विरोध करना शुरू कर दिया।

पुलिस टीम ने लोगों को पीछे धकेलकर निगम की कार्रवाई पूरी कराई। यहां से दुकानों के बाहर रखे ठेले, काउंटर और सामान जब्त किए गए। सड़क पर बेतरतीब ढंग से खड़ी कार को भी जब्त किया गया।

अतिक्रमण से लोग काफी परेशान

झिलमिल वार्ड में अतिक्रमण से लोग काफी परेशान हैं। लोग लगातार निगम के एप पर इसकी शिकायत कर अधिकारियों से समस्या का समाधान करने की गुहार लगा रहे हैं।

निगम पार्षद ने पिछले महीने शाहदरा उत्तरी जोन की वार्ड कमेटी की बैठक में भी इस मुद्दे को उठाया था। पार्षद ने यहां तक आरोप लगाया था कि एक दबंग व्यक्ति रेहड़ी-पटरी वालों से जबरन वसूली करता है।

इसको लेकर निगम की टीम लगातार इस वार्ड में अतिक्रमण के खिलाफ अभियान चला रही है। शनिवार को जैसे ही निगम की टीम पुलिस के साथ सोम बाजार पहुंची तो रेहड़ी-पटरी वालों ने अपना सामान समेटना शुरू कर दिया।

रेहड़ी-पटरी वालों और दुकानदारों के बीच हाथापाई

दुकानदारों ने बाहर रखा सामान अंदर लाना शुरू कर दिया। लेकिन इस दौरान टीम ने दो ठेले उठाकर अपनी गाड़ी में रख लिए और दुकानों के बाहर रखा सामान भी उठा लिया। इस पर रेहड़ी-पटरी वालों और दुकानदारों ने टीम के साथ हाथापाई शुरू कर दी।

पुलिस ने उन्हें समझाया कि अगर सरकारी काम में बाधा डाली तो कानूनी कार्रवाई की जाएगी। तब वे पीछे हटे। इसके बाद निगम कर्मचारी अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई को सुचारू रूप से अंजाम दे पाए।

"सालों से जमे गंदगी के ढेर पर चली सफाई की झाड़ू"

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली - दिल्ली सरकार में जल एवं लोक निर्माण मंत्री प्रवेश साहिब सिंह ने आज श्रीनिवासपुरी क्षेत्र का निरीक्षण किया और जलभराव की पुरानी समस्या के स्थायी समाधान के लिए तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए।

वर्मा ने बताया कि श्रीनिवासपुरी का मुख्य नाला वर्षों से अवरुद्ध पड़ा है और पिछले वर्ष यहां के घरों में लगभग चार फीट तक पानी भर गया था।

"पिछली सरकार और स्थानीय विधायक (पूर्व मुख्यमंत्री) ने इस पर कोई कार्य नहीं किया। लेकिन हम यह नहीं देखते कि क्षेत्र किसका है — हमारा लक्ष्य हर जगह काम करना है।"

उन्होंने कहा कि नाले की डीसिल्टिंग के लिए एक सप्ताह के भीतर वर्क ऑर्डर जारी किया जाएगा और कार्य शुरू होगा।

अधिकारियों को निर्देशित किया गया है कि कार्य की वीडियो रिकॉर्डिंग की जाए, ताकि केवल कागज़ों पर नहीं, ज़मीन पर भी कार्य की सच्चाई दिखे।

निरीक्षण के दौरान माननीय मंत्री द्वारा निम्नलिखित स्पष्ट निर्देश दिए गए:

1. MCD को निर्देशित किया गया है कि श्रीनिवासपुरी नाले की डीसिल्टिंग का कार्य 'ईस्ट ऑफ कैलाश' से शुरू किया जाए।

2. दिल्ली जल बोर्ड (DJB) को निर्देश दिए गए हैं कि 19 अप्रैल से पहले डक्ट्स पर जमा C&D वेस्ट और मलबे की सफाई पूरी की जाए।

3. कुल्वर्ट (Culvert) पर बाउंड्री वॉल की ऊंचाई बढ़ाने और कॉइल फेंसिंग लगाने का निर्देश दिया गया है।

4. दक्षिण-पूर्व जिले के जिला मजिस्ट्रेट (DM South East) को अतिक्रमण हटाने के निर्देश दिए गए।

5. DCP South East को पुलिस सुरक्षा उपलब्ध कराने को कहा गया, ताकि डक्ट्स पर बाउंड्री वॉल निर्माण बाधित न हो।

6. PWD को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया कि कोई भी नाला दिल्ली जल बोर्ड के डक्ट से न जुड़ा हो।

निरीक्षण के दौरान दक्षिणी दिल्ली के सांसद रामवीर सिंह बिधूड़ी और स्थानीय निगम पार्षद राजपाल सिंह भी मौजूद रहे। सभी ने क्षेत्र की समस्याओं को लेकर मंत्री से चर्चा की और समाधान की दिशा में उठाए गए कदमों की सराहना की।

मानसून से पहले युद्ध स्तर पर तैयारियां

प्रवेश साहिब सिंह ने कहा कि दिल्ली सरकार की प्राथमिकता है कि इस बार मानसून में कहीं भी जलभराव की स्थिति न बने। नालों की डीसिल्टिंग को मिशन मोड में लिया गया है और हर क्षेत्र में कार्य को समयबद्ध ढंग से पूरा किया जा रहा है।

जल टैंकरों पर GPS, सेंसर और फ्लो मीटर से निगरानी

जब जल टैंकरों में GPS इंस्टॉलेशन को लेकर सवाल किया गया तो मंत्री ने बताया:

"GPS ही नहीं, सभी टैंकरों में सेंसर और फ्लो मीटर भी लगाए जा रहे हैं। अब हम यह जांच पाएंगे कि टैंकर जिस बिंदु पर गया, क्या उसने पानी खाली किया या नहीं। पहले इसमें भारी गड़बड़ी होती थी — टैंकर माफिया सक्रिय था।"

अब टैंकरों की मॉनिटरिंग डिजिटल प्लेटफॉर्म पर रियल टाइम होगी। उन्होंने कहा:

"अब पेमेंट तभी होगी जब सही ढंग से पानी सप्लाई हो, ताकि इस भीषण गर्मी में लोगों को समय पर पानी मिल सके।"

दिल्ली सरकार का लक्ष्य है कि जल संकट और जलभराव दोनों से दिल्लीवासियों को राहत मिले, और इसके लिए तकनीक और प्रशासनिक निगरानी का बेहतर समन्वय सुनिश्चित किया जा रहा है।

फ्रेंड्स कॉलोनी इंडसट्रियलिस्ट एसोसिएशन द्वारा हनुमान जयंती के पावन अवसर पर भव्य भंडारे का आयोजन किया

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

आज हनुमान जन्मोत्सव पर भक्ति, सेवा और सामाजिक समर्पण की मिसाल पेश करते हुए, फ्रेंड्स कॉलोनी इंडसट्रियलिस्ट एसोसिएशन ने हनुमान जयंती के शुभ अवसर पर फ्रेंड्स कॉलोनी इंडसट्रियल एरिया में एक भव्य भंडारे का आयोजन किया। आयोजन ने धार्मिक आस्था के साथ-साथ समाज में एकता, सहयोग और सेवा की भावना को भी बल प्रदान किया।

पूरे आयोजन क्षेत्र को आकर्षक ढंग से सजाया गया था। कार्यक्रम की शुरुआत हनुमान चालीसा के सामूहिक पाठ, पुष्पांजलि और आरती से हुई, जिसमें श्रद्धालुओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। भंडारे में हज़ारों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। पूड़ी, सब्ज़ी, हलवा और छाछ से युक्त शुद्ध सात्विक भोजन की व्यवस्था की गई थी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता चेयरमैन डॉ. अनिल गुप्ता ने की। आयोजन का नेतृत्व करते हुए प्रधान हरीश गर्ग, महासचिव विनीत जैन, और कोषाध्यक्ष राहुल गुप्ता सहित एसोसिएशन के सभी पदाधिकारियों ने पूरे समर्पण भाव से कार्य किया। इस आयोजन में पूरे औद्योगिक क्षेत्र के उद्यमियो, व्यापारियों, कर्मचारियों और स्थानीय नागरिकों ने पूर्ण सहयोग और उत्साह के साथ भाग लिया।

भंडारे की खास बात यह रही कि इसमें कई विशिष्ट अतिथियों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से आयोजन की शोभा बढ़ाई।

मुख्य अतिथि विधायक संजय गोयल, पार्षद पंकज लूथरा, एसडीएम मोहन कुमार, एसीपी मुकेश वालिया और एसएचओ बृजेश मिश्रा ने कार्यक्रम में सम्मिलित होकर आयोजन समिति को बधाई दी और इस भक्ति व सेवा युक्त आयोजन की सराहना की।

इस अवसर पर कई मीडिया प्रतिनिधियों और पत्रकारों ने भी भाग लिया और आयोजन को कवर करते हुए समाज में इसकी सकारात्मक छवि को प्रकट किया।

डॉ. अनिल गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा, "हनुमान जयंती केवल पूजा का दिन नहीं, बल्कि यह अवसर है समाज के हर वर्ग को जोड़ने का — सेवा और समर्पण की भावना को जागृत करने का। "हर वर्ष हमारा प्रयास रहता है कि इस आयोजन को समाज से जोड़ते हुए सेवा के स्तर को और ऊंचा किया जाए।"

महासचिव विनीत जैन ने बताया कि आयोजन की संपूर्ण तैयारियां कई दिन पहले से शुरू की गई थीं और टीमवर्क की भावना से सभी व्यवस्थाएं सफल रहीं साथ ही साथ सभी प्रायोजकों, स्वयंसेवकों और भागीदारों का धन्यवाद व्यक्त किया जिन्होंने आयोजन को सफल बनाने में सहयोग किया।

भंडारे में श्रमिकों से लेकर उद्योगपतियों तक, हर वर्ग के व्यक्ति ने एक साथ प्रसाद ग्रहण किया — जो अपने आप में सामाजिक समानता और एकता का प्रतीक रहा।

आयोजन के दौरान स्वच्छता, अनुशासन और व्यवस्था की मिसाल पेश की गई, जिसकी सभी आगंतुकों ने खुले दिल से सराहना की।

फ्रेंड्स कॉलोनी इंडसट्रियलिस्ट एसोसिएशन का यह प्रयास न सिर्फ एक धार्मिक आयोजन था, बल्कि समाज को जोड़ने, सकारात्मकता फैलाने और सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित करने की दिशा में एक प्रेरणादायी पहल बन गया है।

संस्कारशाला: समाज के समन्वय का उत्सव: श्री हनुमान जन्मोत्सव — एक प्रेरणास्पद पहल

आज के भागदौड़ और डिजिटल युग में, जब पारिवारिक संवाद और सामाजिक सहभागिता धीरे-धीरे क्षीण हो रही है, ऐसे में सामूहिक पर्व आयोजनों का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। दिनांक 12 अप्रैल को सेंट्रल पार्क स्प्रिंगफील्ड कॉलोनी में आयोजित श्री हनुमान जन्मोत्सव इसका एक प्रेरणादायक उदाहरण रहा, जिसमें बच्चों, युवाओं और वरिष्ठ नागरिकों ने एक साथ भाग लेकर समाज में एकता, श्रद्धा और संस्कृति का संदेश दिया।

इस आयोजन की विशेषता यह रही कि यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं था, बल्कि समाज के समस्त वर्गों को जोड़ने का एक सेतु था। श्री हनुमान चालीसा का सामूहिक पाठ, भजनों की गूंज, गणेश वंदना, श्रीराम स्तुति और आरती — इन सभी ने मिलकर एक सांस्कृतिक जागृति का संचार किया। विशेष रूप से श्री हनुमान जी के चरित्र का वर्णन न केवल बच्चों के लिए शिक्षाप्रद था, बल्कि युवाओं के लिए प्रेरणा और वरिष्ठों के लिए आस्था की पुनः पुष्टि जैसा अनुभव रहा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रताप शाखा, विनायक नगर के स्वयंसेवक बंधुओं और समाज के अन्य सभी बंधुओं का समर्पण इस आयोजन में स्पष्ट रूप से झलकता है। ऐसे आयोजनों के माध्यम से न केवल धार्मिक मूल्यों का प्रचार-प्रसार होता है, बल्कि समाज में आपसी मेलजोल, सहयोग और आत्मीयता की भावना भी प्रबल होती है।

क्यों जरूरी है ऐसे आयोजनों में सम्मिलित होना?

बच्चों को संस्कार और परंपरा से जोड़ना: आज की पीढ़ी को हमारी गौरवशाली संस्कृति से परिचित कराना अत्यावश्यक है। ऐसे आयोजनों से उन्हें न केवल कथा और भक्ति से जुड़ाव होता है, बल्कि समाजिक सहभागिता का पाठ भी मिलता है।

युवाओं में नेतृत्व और सेवा भावना का विकास: आयोजन की योजना, संचालन और अनुशासन में युवाओं की भूमिका उन्हें समाज के प्रति जिम्मेदार बनाती है।

वरिष्ठ नागरिकों का अनुभव और आशीर्वाद: जीवन के अनुभवी स्तंभों का मार्गदर्शन इन आयोजनों में ऊर्जा और दिशा दोनों प्रदान करता है।

सामूहिकता से सशक्त समाज: जब सभी वर्ग एक साथ आते हैं, तो समाज में सद्भाव, आत्मीयता और एकता का संदेश जाता है।

आज जब समाज में विभाजन, स्वार्थ और उदासीनता की भावना बढ़ती जा रही है, ऐसे में श्री हनुमान जन्मोत्सव जैसे आयोजनों का महत्व पहले से कहीं अधिक है। यह केवल धर्म नहीं, संस्कृति, संस्कार और सामाजिक समरसता का उत्सव है।

आइए, हम सभी मिलकर यह संकल्प लें कि हम ऐसे आयोजनों में न केवल भाग लेंगे, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी जोड़ने का कार्य करेंगे — ताकि हमारा समाज संस्कारों से समृद्ध, संगठित और सशक्त बन सके।

जय श्री राम। जय बजरंग बली।

श्री हनुमान जन्मोत्सव पर 11000 श्री हनुमान चालीसा पाठः एक भव्य और ऐतिहासिक क्षण

इंद्रप्रस्थ कॉलोनी में हुआ दिव्य आयोजन, रिदमशाला ने ड्रमिंग के साथ जोड़ी भक्ति की ताल

परिवहन विशेष न्यूज

श्री हनुमान जन्मोत्सव के पावन अवसर पर इंद्रप्रस्थ कॉलोनी में एक अद्वितीय और ऐतिहासिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जहाँ सामूहिक रूप से 11,000 श्री हनुमान चालीसा पाठ का संकल्प लिया गया और उसे श्रद्धा एवं ऊर्जा के साथ पूर्ण किया गया। यह कार्यक्रम न केवल आध्यात्मिक रूप से अत्यंत प्रभावशाली रहा, बल्कि सभी आयु वर्ग के लोगों ने इसमें भाग लेकर इसे एक जनआंदोलन और एक उत्सव का स्वरूप दे दिया।

कार्यक्रम की विशेष बात यह रही कि इसमें बच्चों से लेकर वरिष्ठ नागरिकों तक, सभी ने मिलकर एकसाथ श्री राम के अनन्य भक्त हनुमान जी का गुणगान किया। हर चेहरे पर आस्था की चमक और हर स्वर में भक्ति की गूंज सुनाई दे रही थी।

रिदमशाला द्वारा आयोजित लाइव ड्रमिंग ने इस आयोजन को और भी ऊर्जावान और प्रेरणादायक बना दिया। श्री हनुमान चालीसा के साथ बजती ढोलक, ड्रम्स और तालों ने ऐसा वातावरण तैयार किया जहाँ भक्ति और संगीत का अद्भुत संगम देखने को मिला। युवाओं की भागीदारी को प्रेरित करने में रिदमशाला की भूमिका सराहनीय रही, जिसने यह सिद्ध किया कि अध्यात्म और आधुनिक संगीत मिलकर समाज को एक नई दिशा दे सकते हैं।

इस कार्यक्रम के माध्यम से न केवल हनुमान जी के चरित्र और उनके आदर्शों का प्रचार-प्रसार हुआ, बल्कि यह आयोजन युवाओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत भी बना। श्री हनुमान जी के गुण – शक्ति, सेवा, समर्पण और विनम्रता – को इस आयोजन ने जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया।

कार्यक्रम का समापन भव्य आरती और प्रसाद वितरण के साथ हुआ। उपस्थित लोगों ने इसे अपने जीवन का एक अविस्मरणीय क्षण बताया।

श्री हनुमान जन्मोत्सव पर इस तरह के सामूहिक आयोजन से यह संदेश जाता है कि जब समाज एकत्र होता है, तो वह न केवल आध्यात्मिक उन्नति की ओर बढ़ता है, बल्कि सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक चेतना का भी निर्माण करता है।

जय श्री राम।
जय बजरंगबली।

'सितारों की दुनिया' : सुभाष शिरढोनकर

'सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी' के डांसिंग स्टार- अक्षय ओबेरॉय

1 जनवरी, 1985 को अमेरिका में न्यूजर्सी के मोरिस टाउन में पैदा हुए जाने माने एक्टर अक्षय ओबेरॉय अपने बॉडी डिसिप्लिन और फिटनेस के प्रति जूनून के लिए जाने जाते हैं। ऑन-स्क्रीन एक्शन के नए अंदाज खोजने के लिए वह हमेशा काफी एक्साइटेड रहते हैं।

अक्षय ओबेराय ने सूरज बड़जात्या के राजश्री प्रोडक्शंस की फिल्म 'इसी लाइफ में... !' (२010) से अपने फ़िल्मी करियर की शुरुआत की।

इसके बाद वे बिजॉय नांबियार के टीवी शो 'एमटीवी रश' (२०१२) के पहले एपीसोड में नजर आए। इसमें उनके काम से प्रभावित होकर बिजॉय नांबियार ने उन्हें एक बार फिर, सस्पेंस थ्रिलर फिल्म, 'पिज्जा' के तमिल रीमेक (२014) में अवसर दिया।

अक्षय ओबेरॉय को ऋतिक रोशन और दीपिका पादुकोण स्टारर ब्लॉकबस्टर फिल्म 'फाइटर' (२०२४) में जेट फाइटर पायलट के रूप में शानदार परफॉरमेंस के लिए लोगों का जबरदस्त रिस्पॉन्स मिला। इसके बाद उन्हें बड़े-बड़े प्रोडक्शन हाउस की और से जबर्दस्त रोल्स ऑफर होने लगे हैं।

अक्षय ओबेराय अपनी फिल्म 'वर्चस्व' की शूटिंग कंपलीट कर चुके हैं और अब इसकी रिलीज़ का इंतज़ार कर रहे हैं। इसके अलावा वे रवि किशन और त्रिधा चौधरी के साथ एक फिल्म कर रहे हैं।

नेपोटिज्म के लिए ख्यातिप्राप्त फिल्म मेकर करण जौहर ने अपनी रोमांटिक-कॉमेडी फिल्म 'सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी' के लिए अक्षय ओबेरॉय को अनुबंधित किया है। करण की इस फिल्म में वे चार गानों पर डांस करते नजर आएंगें। करण का कहना है कि इस फिल्म में अक्षय को साइन करने का ख्याल उन्हें फिल्म 'फाइटर' (२०२४) में उन पर फिल्माए गए डांस नंबर 'शेर खुल गए' के बाद आया। यह पहली बार है जब अक्षय को एक ही फिल्म में कई गानों पर डांस करने का मौका मिला है।

काम पर वापस लौटीं, शोभिता धूलिपाला

फिल्म इंडस्ट्री में एक ग्लैमरस एक्ट्रेस के तौर पर आज शोभिता धूलिपाला की तूती बोलती है। लेकिन एक वक्त था जब इन्हें हजारों रिजेक्शन झेलने पड़े थे। इनकी डार्क स्किन टोन की वजह से इन्हें काफी ट्रोल भी किया जाता था। कई साउथ और बोलीवुड फिल्मों के अलावा अनेक वेब सीरीज में नजर आ चुकी शोभिता धूलिपाला अक्सर अपने स्टाइलिश लुक्स की वजह से चर्चाओं में रहती हैं। तमाम चुनौतियों का डटकर मुकाबला करते हुए शोभिता ने आज फिल्म इंडस्ट्री में अपनी पहचान बना ही ली है। उनकी एक्टिंग और फिटनेस के लाखों लोग कायल है।

31 मई, 1992 को आंध्र प्रदेश के तेनाली में एक तेलुगु ब्राह्मण परिवार में पैदा हुई एक्ट्रेस शोभिता धूलिपाला के पिता मर्चेंट नेवी में थे और मां टीचर थी।

शोभिता ने ग्रेज़ुएशन पूरी करने के बाद मास्टर्स में दाखिला लिया था लेकिन तभी मॉडलिंग के कुछ ऑफर आ गए और इस तरह वह मुंबई आ गई। मुंबई में मॉडलिंग के दौरान उन्होंने फिल्मों के लिए होने वाले ऑडिशन के लिए भी जाना शुरू कर दिया।

शोभिता को बॉलीवुड में पहला ब्रेक अनुराग कश्यप की फिल्म 'रमन राघव २.0' (२016) से मिला। इस फिल्म में शोभिता के काम को पसंद किया गया। इसके बाद उन्हें सैफ अली खान के साथ 'शेफ' (२017) और 'कालाकांडी' (२018) जैसी फिल्में मिल गईं।

तेलुगु फिल्म 'गुडाचारी' (२018) से शोभिता धूलिपाला ने साउथ इंडस्ट्री में कदम रखा। इसके बाद उन्होंने मलयालम फिल्म 'मूथोन' (२019) 'कुरूप' (२०२1) के अलावा हिंदी और तेलुगु में एक साथ बनी फिल्म 'मेजर' (२०२२) में काम किया। उन्हें मणिरत्नम की तमिल फिल्म 'पोन्नियिन सेलवन 1' (२०२२) और 'पोन्नियिन सेलवन २' (२०२३) में भी काम करने का अवसर मिला।

वेब सीरीज 'मेड इन हैवेन' (२019) और 'मेड इन हैवेन २' (२०२३) में शोभिता धूलिपाला मॉडर्न, डेयरिंग और बोल्ड अंदाज में थी। इस सीरीज में शोभिता धूलिपाला के जिम सरभ के साथ इंटीमेट सीन्स ने खूब सुर्खियां बटोरी थीं।

डिज्नी प्लस हॉटस्टार की वेब सीरीज 'द नाइट मैनेजर 1' (२०२३) 'द नाइट मैनेजर २' (२०२४) में शोभिता धूलिपाला की अब तक की सबसे शानदार परफॉर्मेंस कही जा सकती है। इस सीरीज में कावेरी दीक्षित के किरदार में अनिल कपूर के साथ उनकी केमिस्ट्री और किसिंग सीन कमाल के रहे। जबर्दस्त बोल्ड और ग्लैमरस अवतार में उन्होंने कमाल का प्रदर्शन किया था।

२०२२ में हैदराबाद में फिल्म 'मेजर' के प्रमोशन के दौरान शोभिता धूलिपाला की मुलाकात नागा चैतन्य से हुई। उसके बाद धीरे-धीरे दोनों की दोस्ती प्यार में बदली और उन्होंने डेटिंग शुरू कर दी।

२०२२ में नागा चैतन्य और शोभिता धूलिपाला के रिलेशनशिप में होने के रूमर्स चारों तरफ फैल गए थे और आखिरकार सामंथा रूथ प्रभु से तालक के बाद सिंगल हो चुके नागा चैतन्य ने, 4 दिसंबर २०२4 को हैदराबाद के अन्नपूर्णा स्टूडियो में शोभिता धूलिपाला से शादी कर ली।

शोभिता ने शादी के बाद कुछ समय के लिए अपने काम से ब्रेक लिया था लेकिन अब वह एक बार फिर काम पर वापस लौट आई हैं। उन्होंने अपने अगले प्रोजेक्ट की शूटिंग हैदराबाद में शुरू कर दी है। इसके अलावा वह आलिया भट्ट की फिल्म 'जिगरा' में भी नज़र आएगी।

'तुला शिकविन चंगलाच ढडा' की भुवनेश्वरी सूर्यवंशी- कविता लाड

मराठी थिएटर, टेलीविजन और फिल्मों की जानी मानी अभिनेत्री कविता लाड को २०२३ से वर्तमान में प्रसारित बेहद कामयाब मराठी टीवी धारावाहिक 'तुला शिकविन चंगलाच ढडा' में भुवनेश्वरी सूर्यवंशी के किरदार के लिए जाना जाता है।

कविता लाड का जन्म महाराष्ट्र की मायानगरी मुंबई से सटे ठाणे में हुआ था। उन्होंने अपनी शिक्षा ठाणे से ही पूरी की। कविता लाड ने २००३ में आशीष मेधेकर से शादी की।

कविता लाड ने अपने एक्टिंग करियर की शुरूआत एन. चंद्रा की मराठी फिल्म 'घायल' (१९९३) के साथ की थी। इस फिल्म में वह रमेश देव के बेटे अजिंक्य देव के साथ स्क्रीन पर नज़र आईं थीं।

'घायल' (१९९३) के बाद उन्होंने लक्ष्मीकांत बेर्डे के साथ 'जिगर' (1998), प्रशांत दामले के साथ 'तू तिथे मी' (1998) में काम किया। इस फिल्म ने राष्ट्रीय पुरस्कार जीता था। इसके बाद वह 'चल कांवरिया शिव के धाम' (1995) 'लापुन छापुन' (२००६), 'अनोळखी हे घर माझे' (२००8), 'सुखांत' (२००९), 'उर्फी' (२०१५), 'डॉक्टर रखमाबाई' (२०१६), 'असेही एकदा व्हावे' (२०18) ,'लव यू जिंदगी (२०19), 'गर्लफ्रेंड' (२०19) जैसी अनेक फिल्मों में दिखाई दीं।

पिछले साल कविता की एक मराठी फिल्म 'नाच गा घुमा' (२०२४) थियेटर में रिलीज हुई थी जिसे काफी अधिक पसंद किया गया।

कविता लाड संभवत: पहली ऐसी एक्ट्रेस हैं जिन्होंने फिल्म जगत में अपनी शुरूआत करने के बाद थियेटर शुरू किया वर्ना अधिकतर एक्टर थियेटर से होते हुए फिल्मों में आते हैं।

मराठी फिल्म जगत और रंगमंच के साथ ही कविता लाड का मराठी टीवी जगत में भी डंका बजता रहा है। कविता ने 'कॉमेडी डॉट कॉम' (२०००) 'काय पहिलस माझ्यात' (२०००) 'चार दिवस सासुचे' (२००१-२०१२) 'डर उघाड़ा ना गाडे' (२००७) 'उंच माझा झोका' (२०१२-२०१३) और 'राधा ही बावरी' (२०१२-२०14) जैसे मराठी धारावाहिकों में छोटे छोटे किरदार निभाने के अलावा 'मेजवानी परिपूर्ण किचन' (२००६-२०१२) एपिसोडिक भूमिका 'जोड़ी जमली रे' (२००8) जैसे टीवी शो को होस्ट भी किया।

२०२३ में शुरू हुए मराठी धारावाहिक 'तुला शिकविन चंगलाच ढडा' में उनके द्वारा निभाए गए भुवनेश्वरी सूर्यवंशी के किरदार ने उन्हें मराठी टीवी जगत में अमर कर दिया। यह शो आज भी जारी है। इस शो में उन्होंने जो किरदार निभाया, वह बहुत कम एक्टर्स के हिस्से में आता है।

सुभाष शिरढोनकर

बैसाखी जलियांवाला बागकांड की एक और वर्षगांठ

काल की क्या मजाल जो विस्मृत करें बलिदान को

डा. विनोद बब्बर

कोई भी नगर, ग्राम निर्जीव संज्ञा नहीं होतां. उसे कुछ सौ या हजार वर्षों के इतिहास का मूक साक्षी अथवा कुछ लाख लोगों की उन्नत या विपन्न बस्ती मानना भी उनका सही मूल्यांकन नहीं हो सकता है। सब नहीं तो कुछ नगर अपने आप में इतिहास के ऐसे नायक होते हैं जिनके त्याग, समर्पण के समक्ष महानायक भी सिर झुका कर गौरवान्वित होते हैं। इतिहास के अमिट पृष्ठों पर अपनी पहचान बनाने वाले नगरों में अमृतसर का नामोल्लेख होते ही मानस पटल पर उभर आते हैं- दरबार साहिब, जलियांवाला बाग, दुर्ग्याना मंदिर, रामबाग। शहर के हाल बाजार गेट पर लिखा, 'अमृतसर सिफ़्टी दा घर' इस धरती की सिफ़्टी (विशेषताएं) स्मरण कराता है।

जहां यह गुरु की नगरी है, वही स्वतंत्रता का तीर्थ भी है। जी हां, जलियांवाला बाग और हरमंदिर साहिब दोनों ही एक-दूसरे के निकट हैं। यदि इस संयोग पर गंभीरता से विचार किया जाये तो यह तथ्य हमारे सामने आता है कि पवित्र दरबार साहिब, हरमंदिर साहिब, स्वर्ण मंदिर जिन गुरुओं और उनके द्वारा आरंभ किये गये खालसा पंथ का प्रतीक है, उस खालसा ने भी भारत की धार्मिक स्वतंत्रता के लिए असंख्य बलिदान दिये हैं। स्वतंत्रता की रक्षा के क्रम में जालियांवाला बाग में हजारों हुतात्माओं ने बलिदान दिया। धार्मिक स्वतंत्रता और राजनीतिक स्वतंत्रता एक दूसरे की पूरक हैं। अत: हरमंदिर साहिब और जलियांवाला बाग का निकट होना मात्र संयोग नहीं, स्वाभाविक है।

अमृतसर नाम का उच्चारण ही हृदय को पवित्र करता है। अमृत के इस सरोवर ने भारतीयता को गौरवमयी पहचान दी। पंचनद की इस पवित्र नगरी ने इतिहास के अनेक स्याह और श्वेत अध्याय रचे हैं। खालसा पंथ की गरिमा और उच्च परम्परा की रक्षा के लिए बलिदान की कड़ी में देश की स्वतंत्रता के लिए 1919 की ख़ूनी वैसाखी को कौन भारतीय विस्मृत कर सकता है। अमृत सरोवर की नगरी को रक्त सरोवर बनाने वाले अंग्रेज जल्लाद डायर ने मानवता को शर्मसार करने की हद तक नीचता दिखाई।

यह किसी भावुक हृदय की अनुभूति नहीं, कठोर हृदय भी अमृतसर के जलियांवाला बाग में आकर भावुक हो जाये तो कोई आश्चर्य नहीं होगा। यह वह स्थान है जिसने स्वयं को दुनिया की सबसे सभ्य और सुसंस्कृत कौम बताने वालों के असली चेहरे को दुनिया के सामने बेनकाब किया था। शांतिपूर्वक सभा कर रहे लोगों पर बिना किसी चेतावनी के अंधाधुंध गोलियां बरसाने वाला जल्लाद अपनी करनी पर शर्मिंदा नहीं था। इसीलिए तो उसने बार-बार कहा, 'मेरे पास उस दिन 1,650 गोलियां ही थीं। अगर और अधिक होतीं तो .... !' छह सप्ताह के बच्चे से वृद्ध तक को अपनी गोलियों का शिकार बनाने वाले से जब पूछा गया कि 'छह सप्ताह के बच्चे से तुम्हें क्या खतरा था? उसे गोली का शिकार क्यों बनाया गया?' उस अमानुष का उत्तर था, 'ही डीड नाट आस्क फॉर मरसी he did not ask for mercy (उसने दया के लिए नहीं कहा था)'. इससे भी बड़ा दु:खद आश्चर्य यह कि हंटर कमीशन से ब्रिटिश संसद तक डॉयर के कृत्य की निंदा करने वालों का अकाल था।

जहां तक मेरी स्मृति कारगर है, दस वर्ष का था तो अपनी पूज्य दादी के साथ वैशाखी के अवसर पर दरबार साहिब में दर्शन के बाद जलियांवाला बाग जाने का अवसर मिला। आज गलियारा योजना ने स्थिति को बदल दिया है लेकिन उस समय तंग रास्ते से होते हुए जब छोटे से गेट वाले एक बड़े मैदान में पहुंचे तो विशाल 'अग्नि शिखा' स्मारक से साक्षात्कार हुआ। यह जानकारी मिली कि भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने इस स्मारक को राष्ट्र को समर्पित किया था।

मैं आश्चर्यचकित था कि वहां भीड़ होते हुए भी एक अजीब किस्म का मौन पसरा हुआ था। ऐसा महसूस हो रहा था कि वह भीड़ आज भी गोलियों की आवाज़ के बीच स्वजनों के चीत्कार सुन रही थी। चारों ओर नज़र दौड़ाने पर दीवारों पर गोलियों के निशान और उसी मैदान में बने कुएं पर लगी पट्टिका 13 अप्रैल, 1919 (वैसाखी) के उस भयावह क्षण का स्मरण करा रही थी जब सैकड़ों लोगों ने गोलियों की बौछार से स्वयं को बचाने के लिए इस कुएं में छलांग लगाकर अपने प्राण बचाने का असफल प्रयास किया था। रोलेट ऐक्ट के विरोध के लिए इस मैदान में एकत्र भीड़ पर अंग्रेज अधिकारी जनरल डॉयर ने बिना किसी चेतावनी के गोलियाँ चलवा दीं। 1,650 राउंड फायर हुए जिससे धरती ख़ून से लथपथ लाल हो उठी। मारे गये लोगों की संख्या पर अनेक मत हैं। अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर कार्यालय में 484 शहीदों की सूची है जबकि जलियांवाला बाग में लगी सूची में 388 शहीदों के नाम हैं। पंडित मदन मोहन मालवीय के अनुसार कम से कम 1,300 लोग मारे गए। स्वामी श्रद्धानंद के अनुसार मरने वालों की संख्या 1,500 से अधिक थी जबकि अमृतसर के तत्कालीन सिविल सर्जन डॉक्टर स्मिथ के अनुसार मरने वालों की संख्या 1,800 से अधिक थी। ब्रिटिश अभिलेख इस घटना में २०० लोगों के घायल होने और 379 लोगों के शहीद होने की बात स्वीकारते हैं जिनमें से 337 पुरुष, 41 नाबालिग लड़के और एक छह सप्ताह का बच्चा था। अनेक वृद्ध और अक्षम भी मृतकों में शामिल थे।

भारतीयों के लिए जलियांवाला बाग स्वतंत्रता का तीर्थ है। बचपन से आज तक जब-जब अमृतसर जाने का अवसर मिला, इस तीर्थ की माटी को मस्तक पर लगाना नहीं भूला। जब-जब जलियांवाला बाग के कुंए में झांका मैंने अपने पंचभूत शरीर को वहां पाया। दीवार में लगी गोलियों के निशान मुझे अपने सीने से टकराती डॉयर की गोलियों सरीखे कष्ट देते है। कोई आश्चर्य नहीं, हर संवेदनशील भारतीय 1954 में बनी 'जागृति' फिल्म का कवि प्रदीप द्वारा रचित गीत 'आओ बच्चों तुम्हें दिखाये झाँकी हिंदुस्तान की, इस मिट्टी से तिलक करो ये धरती है बलिदान की! वंदे मातरम!' सुनते हुए स्वयं को जलियांवाला बाग में ही पाता है।

शायद ही कोई इस तथ्य से असहमत होगा कि यदि किसी एक घटना ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को सर्वाधिक प्रभावित किया तो वह जलियांवाला का जघन्य हत्याकाण्ड ही था। इसने उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम की सीमाओं को भुलाते हुए सम्पूर्ण भारत में स्वतंत्रता की ऐसी लहर उत्पन्न की जिसके सम्मुख अपराजित ब्रिटिश भी पराजित हो गये। जलियांवाला बाग़ नरसंहार को व्यापक रूप से भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में देखा जाता है, जिसने अंग्रेजों के उस क्रूर और दमनकारी चेहरे को बेनकाब कर दिया जो अंग्रेजी राज को भारतीयों के लिए वरदान घोषित करता था।

इस हत्याकांड से गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर इतने विचलित हुए कि ब्रिटिश शासन द्वारा 1915 में प्रदत्त 'नाइटहुड' की उपाधि वापस लौटाते हुए तत्कालीन वायसराय लॉर्ड चेम्सफोर्ड को प्रेषित पत्र में उन्होंने कहा था, 'जिस तरह हमें अपमानित किया गया है, अब उसे देखते हुए सरकार से मिले सम्मान के तमगे हमारे लिए लज्जा का विषय बन गये हैं। इसलिए मैं अपने देशवासियों की खातिर उन सब विशेष सम्मानों से वंचित होना चाहता हूं क्योंकि मेरे देशवासियों को इतना महत्वहीन समझा गया और उनसे ऐसा अपमानजनक व्यवहार किया गया जो मनुष्योचित नहीं कहा जा सकता।

स्वयं को सर्वाधिक सभ्य घोषित करने वालों की इस करतूत को जानना हर भारतीय का कर्तव्य है। जो कौम अपने बलिदानी धरती-पुत्रों को विस्मृत कर देती है, वह अपने भविष्य में भी अतीत के काले अध्याय की पुनरावृति को सुनिश्चित करती है। इसलिए यह लेखनी जलियांवाला बाग के हुतात्माओं को बारम्बार प्रणाम करते हुए कहना चाहती है-

भारत माता के वीर बलिदानी सपूतों! काल की क्या मजाल कि तुम्हें मार सके, तुम अमर थे! अमर हो! सदा अमर ही रहोगे!!

बैसाखी पर्व 13 अप्रैल 2025 खुशहाली व समृद्धि का प्रतीक - खालसा पंथ की स्थापना व नई फ़सल कटाई का प्रतीक

बैसाखी के दिन गुरुद्वारों में विशेष पूजा,अरदास,भजन कीर्तन व प्रभातफेरी कणाह प्रसाद का विशेष महत्व –

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर भारत सर्वधर्म समभाव का सटीक प्रतीक माना जाता है, क्योंकि यहां हर धर्म के त्योहारों का आनंद सब मिलकर लेते हैं, जो विदेशी सैलानी भी लेने आते हैं, व पूर्ण रूप से प्रभावित व संतुष्ट होकर जाते हैं। अभी हमने कुछ दोनों पूर्व ही महाकुंभ उत्सव चेट्रीचंड्र, ईद, रामनवमी का उत्साह देखे हैं जो अलग-अलग जाति धर्म समाज़ों के त्यौहार है, परंतु हमने देखे कि इन्हें सभी ने मिलकर मनाया, जो हमारी सामाजिक और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है, इसी कड़ी में 13 अप्रैल 2025 को एक और अध्याय जुड़ गया है, क्योंकि इसदिन पूरा भारत विशेष रूप से पंजाब हरियाणा उत्तरप्रदेश उत्तराखंड हिमाचल प्रदेश जम्मू कश्मीर सहित अनेको राज्यों में मनाया जा रहाहै।हमारी राईसिटी गोंदिया में भी बड़े धूमधाम से,बैसाखी पर्व कोमनाया जाता है, इस दिन मैं स्वयं भी गुरुद्वारे जाकर दर्शन लाभ उठाता हूं, अमृत वेले प्रभातीवेले से ही प्रभात फेरी सहित अनेकों कार्यक्रम शुरू हो जाते हैं, जहां भक्तों के भाव देखकर मैं भी भावभोर हो जाता हूं। हालांकि यह विशेष रूप से सिख समाज व किसानों के ही त्यौहार है, परंतु इसे मनाता सारा मानव समाज है। चूँकि बैसाखी उत्सव, समाज और धर्म के संगम का प्रतीक है, इसलिए आज हम मीडिया उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, बैसाखी पर्व 13 अप्रैल 2025, खुशहाली और समृद्धि का प्रतीक है, खालसा पंथ की स्थापना व नई फसल कटाई की शुरुआत का प्रतीक है तथा बैसाखी के दिन गुरुद्वारोंमें विशेषपूजाअर्चना,अरदास,भजनकीर्तन व प्रभात फेरी कणाह प्रसाद है का अत्यधिक विशेष महत्व है।

साथियों बात अगर हम भारत में बैसाखी पर्व मनाए जाने की करें तो, बैसाखी के पर्व को वैसाखी के नाम से भी जाना जाता है।बैसाखी का त्योहार पूरे हर्षोल्लास के साथ करीब करीब पूरे भारत में मनाया जाता है। हर साल बैसाखी 13 या 14 अप्रैल को ही मनाया जाता है, हर वर्ष बैसाखी के दिन सूर्य मेष राशि में करते हैं। बैसाखी के त्योहार से पंजाब और हरियाणा के क्षेत्रों में फसलों की कटाई शुरू हो जाती है। बैसाखी के पर्व को वैसाखी के नाम से भी जाना जाता है, और इस साल यह पर्व 13 अप्रैल को ही मनाया जा रहा है।बैसाखी के दिन गुरुद्वारों को सजाया जाता है। सिख समुदाय के लोग गुरुवाणी सुनते हैं,घरों में भी लोग इस दिन विशेष पूजा-अर्चना करते हैं। खीर, शरबत आदि पकवान बनाए जाते हैं, इस दिन शाम के समय घर के बाहर लकड़ियां जलाई जाती हैं, जलती हुई लकड़ियों का घेरा बनाकर गिद्दा और भांगड़ा कर अपनी प्रसन्नता जाहिर करते हैं। लोग गले लगकर एक दूसरे को बैसाखी की शुभकामनाएं देते हैं।बता दें बैसाखी के समय आकाश में विशाखा नक्षत्र होता है विशाखा नक्षत्र पूर्णिमा में होने के कारण इस माह को बैसाख कहते हैं, वैशाख माह के पहले दिन को बैसाखी कहा गया है। इस दिन सूर्य मेष राशि में गोचर करते हैं जिस कारण इसे मेष संक्रांति के नाम से भी जाना जाता है। बैसाखी को पोइला, बौइशाख, विशु, और बीहू जैसे नामों से भी जाना जाता है। बैसाखी सिखों का महत्वपूर्ण त्योहार है।1699 में इसी दिन गुरु गोबिंद सिंह जी ने खालसा पंथ की स्थापना की थी। मान्यतानुसार इस पंथ की स्थापना का लक्ष्य धर्म और नेकी के रास्ते पर चलना और उसका पालन करना था। किसान अपनी फसल काटने की खुशी में यह त्योहार मनाते हैं तो वहीं पंजाब में इस दिन गिद्दा-भांगड़ा किया जाता है, इस दिन को सिक्खों के नए साल के रूप में भी मनाया जाता। इस दिन नगर कीर्तन निकाले जाते हैं और समाज में भाईचारे का संदेश दिया जाता है। इसके अलावा, लोग इस दिन नई फसल के आगमन की खुशी में एक-दूसरे को शुभकामनाएं देते हैं और पारंपरिक गीत गाते हैं।

साथियों बात अगर हम बैसाखी उत्सव पर्व के महत्व की करें तो, बैसाखी का पर्व सिख धर्म में विशेष धार्मिक महत्व रखता है। यह दिन सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी द्वारा खालसा पंथ की स्थापना का प्रतीक है। गुरु जी ने इस दिन

सभी जातिगत भेदभावों को समाप्त कर दिया था और एकता का संदेश दिया था। यह पर्व सिखों के लिए एक नया अध्याय, एक नई शुरुआत और धार्मिक सिद्धांतों के पालन का दिन है। गुरु गोबिंद सिंह जी के नेतृत्व में खालसा पंथ की स्थापना ने समाज को एकजुट करने के लिए एक मजबूत कदम उठाया था। बैसाखी पर सिख धर्मावलंबी गुरुद्वारों में विशेष पूजा और अरदास करते हैं। इस दिन विशेष रूप से गुरुद्वारों में भजन-कीर्तन का आयोजन किया जाता है और नगर कीर्तन की परंपरा निभाई जाती है। लोग इस दिन को अपने पवित्र कर्तव्यों को याद करने, गुरु के बताए मार्ग पर चलने और धर्म के प्रति अपनी आस्था को और गहरा करने का अवसर मानते हैं। बैसाखी का पर्व सिख धर्म के लिए एक समय होता है जब वे अपने गुरु की शिक्षा औरखालसा पंथ के महत्व को मानते हुए एकजुट होते हैं और समाज में शांति, भाईचारे और समानता का प्रचार करते हैं।बैसाखी का पर्व भारतीय समाज में एक सांस्कृतिक धरोहर के रूप में मनाया जाता है।यह पर्व विशेष रूप से कृषि प्रधानसमाज के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि बैसाखी के दिन नई फसल की कटाई होती है। किसानों के लिए यह दिन खुशहाली और समृद्धि का प्रतीक होता है,क्योंकि उन्हें अपनीमेहनत का फल मिल रहा होता है। खासकर पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश शहर अनेक प्रदेशों में यह पर्व बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन को किसान अपनी नई फसल की खुशहाली के रूप में मनाते हैं, और पारंपरिक तरीके से खेतों में काम करते हुए ढेर सारी खुशियां मनाते हैं। समाज के लोग एक साथ मिलकर नृत्य, संगीत और विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। पंजाब में 'भांगड़ा' और 'गिद्दा' जैसे पारंपरिक नृत्य होते हैं, जो न केवल आनंद का स्रोत होते हैं, बल्कि एकता और भाईचारे को भी बढ़ावा देते हैं। यह दिन अपने आप में खुशी और एकजुटता का प्रतीक होता है,जब लोग एक- दूसरे के साथ मिलकर खुशी बांटते हैं और जीवन के नए चक्र की शुरुआत का स्वागत करते हैं। सिख समुदाय के लोगों के बीच बैसाखी का धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व है। वे इस त्योहार को बेहद खुशी और आनंद के साथ मनाते हैं। यह त्योहार पंजाबी नए साल की शुरुआत का प्रतीक है, बैसाखी के पर्व को पारंपरिक रीति-रिवाजों के साथ मनाया जाता है. बैसाखी फसल, नई शुरुआत और सिख समुदाय की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का उत्सव है. इस महीने में रबी की फसल पककर पूरी तरह से तैयार हो जाती है और उनकी कटाई भी शुरू हो जाती है, इसीलिए बैसाखी को फसल पकने और सिख धर्म की स्थापना के रूप में मनाया जाता है।

साथियों बात अगर हम बैसाखी के इतिहास की करें तो, बैसाखी का इतिहास 30 मार्च, 1699 को सिखों के दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की थी। उन्होंने सिख समुदाय के सदस्यों से गुरु और भगवान के लिए खुद को बलिदान करने के लिए आगे आने के लिए कहा था, आगे आने वालों को पंज प्यारे कहा जाता था, जिसका अर्थ था गुरु के पांच प्रियजन,बाद में, बैसाखी के दिन महाराजा रणजीत सिंह को सिख साम्राज्य का प्रभार सौंप दिया गया। महाराजा रणजीत सिंह ने तब एक एकीकृत राज्य की स्थापना की, इसी के चलते ये दिन बैसाखी के तौर पर मनाया जाने लगा।बैसाखी स्पेशल कणाह प्रसाद-भारत में कोई भी त्योहार बिना मीठे के नहीं मनाया जाता है। पंजाबी बैसाखी पर (गुड़, आटे का हलवा) यानि कणाह प्रसाद खासतौर पर तैयार करते हैं।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि बैसाखी पर्व 13 अप्रैल 2025 खुशहाली व समृद्धि का प्रतीक - खालसा पंथ की स्थापना व नई फ़सल कटाई का प्रतीक ल।बैसाखी के दिन का उत्सव कृषि, समाज व धर्म के संगम का प्रतीक है।बैसाखी के दिन गुरुद्वारों में विशेष पूजा, अरदास, भजन कीर्तन व प्रभातफेरी कणाह प्रसाद का विशेष महत्व है।

कार के इंजन में पावर और टॉर्क की कितनी भूमिका, दोनों में किसका अधिक होना जरूरी

परिवहन विशेष न्यूज

जब भी कोई नई कार खरीदता है तो वह यह जरूर देखता है कि उसका इंजन कितना पावरफुल है। इसके बारे में पता लगाने के लिए हम अक्सर इससे निकलने वाले पावर आउटपुट और टॉर्क के बारे में जानते हैं। यहीं दोनों मिलकर कार के इंजन की परफॉर्मेंस को तय करते हैं। हम यहां पर आपको इन दोनों की कार के इंजन में भुमिका के बारे में बता रहे हैं।

नई दिल्ली। जब भी कोई कार खरीदने जाता है, तो वह अक्सर जन की पावर और टॉर्क के बारे में बात करते हैं। इन दोनों का असर मतलब और इनकी भूमिका क्या है, यह समझना जरूरी है। यही पावर और टॉर्क इंजन की परफॉर्मेंस को तय करते हैं, लेकिन दोनों का काम अलग-अलग होता है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको कार के इंजन में पावर और टॉर्क की क्या भूमिका होती है और इनमें से किसका ज्यादा होना जरूरी है, इसके बारे में बता रहे हैं।

पावर और टॉर्क क्या हैं?

कार में मिलने वाले पावर को हॉर्सपावर (bhp) में मापा जाता है, इससे पता चलता है कि कार का इंजन कितनी तेजी से काम कर सकता है। यह कार की स्पीड और तेजी से एक्सीलरेशन की कैपेसिटी को दिखाता है। वहीं, टॉर्क को न्यूटन-मीटर (Nm) में मापा जाता है, जो इंजन की ताकत को दिखाता है। इससे पता चलता है कि इंजन कितना बल लगा सकता है। खासकर के भारी वजन उठाने या गाड़ी को शुरू करने में। आसान शब्दों में कहे तो, टॉर्क कार को खींचने की ताकत देता है और पावर उसे स्पीड में दौड़ाने में मदद करता है।

इंजन में पावर की भूमिका

कार में पावर का असर तब दिखाई देता है, जब आपको अपनी कार को तेज स्पीड में चला रहे हों। ज्यादा पावर वाली कार आसानी से हाई स्पीड पकड़ सकती है और दूसरी गाड़ियों को आसानी से ओवरटेक कर सकती है। इसे इस तरह से भी समक्ष सकते हैं, स्पोर्ट्स कार्स में ज्यादा पावर मिलती है, ताकि वह तेजी से स्पीड पकड़ सकें। अगर आपकी कार में पावर कम है, तो हाईवे पर स्पीड बढ़ाने में दिक्कत आ सकती है।

इंजन में टॉर्क की भूमिका

कार में टॉर्क का काम तब ज्यादा अहम हो जाता है, जब आपको गाड़ी को स्टार्ट करना हो, ढलान पर चढ़ना हो या भारी सामान लेकर जाना हो। ज्यादा टॉर्क वाली कार आसानी से भारी वजन खींच सकती है और कम रफ्तार पर भी अच्छी ताकत देती है। उदाहरण- SUVs और ट्रक में ज्यादा टॉर्क मिलता है, ताकि वह ऑफ-रोड या भारी लोड के साथ आसानी से चल सकें। अगर आपकी कार में टॉर्क कम है, तो आपको ढलान पर चढ़ने में काफी परेशानी आ सकती है।

किसका ज्यादा होना जरूरी?

आपकी कार में पावर और टॉर्क में से किसका ज्यादा होना जरूरी है, यह आपकी जरूरत पर निर्भर करता है। अगर आप शहर में गाड़ी चला रहे हैं, जहां पर आपको बार-बार रुकना और चलना पड़ता है या फिर पहाड़ी रास्तों पर जाते हैं, तो आपको ज्यादा टॉर्क वाली कार बेहतर होगी। वहीं, अगर आप रोजाना लंबी दूरी तय करते हैं और तेज रफ्तार में गाड़ी चालाना पसंद करते हैं, तो आपके लिए ज्यादा पावर वाली कार सही रहेगी।

हीरो करिजमा XMR 210 Vs यामाहा R15 V4: इंजन, फीचर्स और कीमत के मामले में कौन बेस्ट

भारतीय बाजार में हाल में लॉन्च हुई Hero Karizma XMR 210 का मुकाबला Yamaha R15 V4 से देखने के लिए मिलता है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको इन दोनों बाइक की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि कौन-सी मोटरसाइकिल परफॉर्मेंस फीचर्स और कीमत के मामले में आपके लिए कौन बेहतर रहने वाली है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। हीरो मोटोकॉर्प ने हाल ही में भारतीय बाजार में Hero Karizma XMR 210 को लॉन्च किया है। इसे दो वेरिएंट में लाया गया है, साथ ही इसके हार्डवेयर में भी बदलाव किया गया है। इसे पहले से ज्यादा प्रीमियम बनाया गया है। भारतीय बाजार में इसका मुकाबला Yamaha R15 V4 से देखने के लिए मिलता है। हम यहां पर आपको इन दोनों (Hero Karizma XMR 210 Vs Yamaha R15 V4) की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि कौन-सी बाइक इंजन, परफॉर्मेंस, फीचर्स और कीमत में आपके लिए बेहतर है।

स्पेसिफिकेशन

Hero Karizma XMR 210	Yamaha R15 V4
इंजन	
210cc सिंगल-सिलेंडर, लिक्विड-कूल्ड	155cc सिंगल-सिलेंडर, लिक्विड-कूल्ड
पावर	
25.5 PS	18.4 PS
टॉर्क	
20.4 Nm	14.2 Nm
गियरबॉक्स	
6-स्पीड	6-स्पीड

हीरो करिज्मा XMR 210 में बड़ा इंजन मिलता है, जो R15 V4 से 7.1PS की पावर और 6.2Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसकी वजह से यह 11.06 सेकंड में 0-100 किमी प्रति घंटे की स्पीड पकड़ लेती है, जबकि R15 को यह स्पीड पकड़ने में 13.25 सेकंड का समय लगता है।

Hero Karizma XMR 210 Vs Yamaha R15 V4: अंडरनिपिंग

स्पेसिफिकेशन

Hero Karizma XMR 210	Yamaha R15 V4
प्रेम	
स्टील ट्रेलिस फ्रेम	डेल्टाबॉक्स फ्रेम
फ्रंट संस्पेशन	
37 mm टेलीस्कोपिक फोर्क / 37 मिमी इनवर्टेड फोर्क	इनवर्टेड फोर्क
रियर सस्पेंशन	
प्रीलोड एडजस्टेबिलिटी के साथ मोनोशॉक	मोनोशॉक
फ्रंट ब्रेक	
300 mm पेटल डिस्क	282 mm डिस्क
रियर ब्रेक	
230 mm पेटल डिस्क	220 mm डिस्क
फ्रंट टायर	
100/80-17	100/80-17
रियर टायर	
140/70-17	140/70-17

दोनों ही मोटरसाइकिल में इनवर्टेड फोर्क दिया गया है, बस MR 210 के बेस वेरिएंट में यह नहीं मिलता है। R15 V4 के पीछे की तरफ मैन्युअल प्रीलोड एडजस्टमेंट नहीं मिलता है, लेकिन लिंक्ड मोनोशॉक मिलता है जो आरामदायक राइड अनुभव देता है। इन दोनों में 17-इंच के अलॉय व्हील और टायर का साइज एक जैसा ही है। XMR 210 में R15 V4 से थोड़े ज्यादा बड़े पेटल डिस्क ब्रेक मिलते हैं, जिससे ब्रेकिंग परफॉर्मेंस बेहतर बनी रहती है।

Hero Karizma XMR 210 Vs Yamaha R15 V4: डाइमेंशन

स्पेसिफिकेशन

Hero Karizma XMR 210	Yamaha R15 V4
व्हीलबेस	
1351 mm	1325 mm
ग्राउंड क्लियरेंस	
160 mm	170 mm
फ्यूल टैंक कैपेसिटी	
11 लीटर	11 लीटर
सीट की ऊंचाई	
810 mm	815 mm
बाइक का वजन	
163.5 kg	141 kg

R15 V4 का वजन XMR 210 से 22.5 किलोग्राम हल्का है, जो काफी ज्यादा है। इसकी वजह से इसे रोजमर्रा के इस्तेमाल के लिए संभालना बहुत आसान हो जाता है। वहीं, इसमें XMR 210 से ज्यादा ग्राउंड क्लियरेंस मिलती है। R15 V4 में 170mm, तो XMR 210 में 160mm का ग्राउंड क्लीयरेंस मिलता है।

Hero Karizma XMR 210	Yamaha R15 V4
कंसोल	
LCD और 4.2-इंच की TFT	LCD
लाइट	
LED	LED
राइड मोड	
नहीं	स्ट्रीक और ट्रैक
ABS	
डुअल चैनल	डुअल चैनल
ट्रैक्शन कंट्रोल	
नहीं	स्वीचेबल
क्विकशिफ्टर	
नहीं	हां

इन दोनों ही मोटरसाइकिल में कई बेहतरीन फीचर्स मिलते हैं। R15 V4 में 2 राइड मोड, स्विचेबल ट्रैक्शन कंट्रोल और क्विकशिफ्टर मिलता है, जो इसे काफी बेहतर बनाती है। दोनों में कुछ खास फीचर्स कॉमन मिलते हैं, जो स्मार्टफोन कनेक्टिविटी और टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन फीचर्स मिलते हैं, जो इन्हें राइड करने में सुविधाजनक बनाता है।

कीमत (रुपये में)

Hero Karizma XMR 210	Yamaha R15 V4
कीमत (रुपये में)	
बेस	
1,81,400	1,84,400
मेटालिक रेड	
1,84,400	टॉप
	1,99,750
	डार्क नाइट
	1,85,400
	कॉम्बैट एडिशन
	2,01,500
	इंटेंसिटी वाइट
	1,89,400
	रेशिंग ब्लू
	वीवीड मैजेंटा मेटालिक

XMR 210 का बेस वेरिएंट R15 V4 से 3,000 रुपये ज्यादा किफायती है। Karizma का टॉप वेरिएंट और कॉम्बैट एडिशन R15 V4 के सभी वेरिएंट से ज्यादा महंगी है।

किआ सेल्टॉस बेस vs टॉप वेरियंट: डिजाइन, फीचर्स और इंजन में कितना अंतर

किआ इंडिया ने हाल ही में **Kia Seltos SUV** के बेस वेरिएंट **HTE(O)** कई बेहतरीन फीचर्स के साथ लॉन्च किया है। इसे साल 2025 अपडेट मिलने के बाद यह काफी किफायती हो गई है। कंपनी इसे टॉप-स्पेक ट्रिक **X-Line** वेरिएंट में भी पेश करती है। हम यहां पर आपको इन दोनों की तुलना (2025 **Kia Seltos HTE (O) vs Top X-Line**) डिजाइन फीचर्स और इंजन में कितना अंतर है?

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। हाल ही में Kia Seltos SUV की नई एंट्री-लेवल वेरिएंट HTE(O) लॉन्च हुई है। इसे कई बेहतरीन फीचर्स के साथ लॉन्च किया गया है, जिसकी वजह से यह काफी किफायती हो गई है। कंपनी इसे X-Line वेरिएंट में पेश करती है, जो इसका टॉप-स्पेक ट्रिम है। इसका टॉप-स्पेक ट्रिम फुली-लोडेड प्रीमियम SUV का एक्सपीरिएंस देता है। यहां पर हम आपको इन दोनों (2025 Kia Seltos HTE (O) vs Top X-Line) की तुलना करते हुए बता रहे हैं। आइए जानते हैं कि इनके डिजाइन, फीचर्स और इंजन ऑप्शन्स में कितना अंतर है?

1. फ्रंट प्रोफाइल

Kia Seltos HTE(O): इसका फ्रंट डिजाइन काफी बेसिक रखा गया है। इसमें हैलोजन प्रोजेक्टर हेडलाइट्स दिए गए हैं, जिसे इंडिकेटर के नीचे लगाया गया है। इसमें सिंपल ग्रिल है और फॉग लैंप्स नहीं दिया गया है। इसमें ग्रिल सिल्वर स्किड प्लेट दी गई है।

Kia Seltos X-Line: इसमें एलईडी हेडलाइट्स दी गई है, जो इंडिकेटर्स के ऊपर लगे हैं। इसमें दिए गए DRLs ग्रिल तक एक्सटेंड हैं और इसमें LED फॉग लैंप्स भी दिया गया है। इतना ही नहीं ग्रिल को मैट फिनिश और पियानो ब्लैक सराउंड भी दिया गया है।

2. साइड प्रोफाइल

Kia Seltos HTE(O): इसमें 16-इंच स्टील व्हील्स दिए गए हैं और इसमें बॉडी कलर्ड डोर हैंडल्स दिए घए हैं। इसमें दिया गया ORVMs मैन्युअली एडजस्टेबल हैं और इसे इंडिकेटर फेंडर पर लगाया गया है।

Kia Seltos X-Line: इसमें 18-इंच ड्यूल-टोन अलॉय व्हील्स दिए गए हैं। इसमें ग्लॉसी ब्लैक ORVMs दिए गए हैं, जो इलेक्ट्रिकली एडजस्टेबल होते हैं। इनमें इंटीग्रेटेड इंडिकेटर्स मिलते हैं। इसमें रूफ रेल्स भी भी दिया गया है।

3. रियर प्रोफाइल

इन दोनों ही वेरिएंट के रियर प्रोफाइल में LED टेल लैंप्स दिए गए हैं, लेकिन इसमें फर्क केवल स्किड प्लेट और बैजिंग की है। HTE(O) में सिल्वर स्किड प्लेट मिलती है, जबकि X-Line में ब्लैक स्किड प्लेट और एक्सक्लूसिव X-Line बैजिंग मिलती है।

4. कलर ऑप्शन्स

Kia Seltos HTE(O): इसे सात मोनोटोन कलर ऑप्शन्स में पेश किया गया है, जिसमें कई ब्राइट शेड्स भी शामिल है। यह कलर क्लीयर वाइट, ग्रेविटी ग्रे, ऑरोरा ब्लैक, इंपीरियल ब्लू, पीटर ऑलिव, इंटेंस रेड और स्पार्कलिंग सिल्वर है।

Kia Seltos X-Line: इसे केवल दो ब्लैक शेड्स में ऑफर किया जाता है, जो ऑरोरा ब्लैक और मैट ग्रेफाइट है।

5. इंटीरियर्स

Kia Seltos HTE(O): इसके केबिन में फैब्रिक सीट्स, थ्री-स्पोक स्टीयरिंग व्हील, सिल्वर डोर हैंडल्स और 4.2-इंच की मल्टी-इन्फो डिस्प्ले के साथ सेमी-डिजिटल इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर मिलता है। इसमें 8-इंच इंफोटेनमेंट डिस्प्ले भी दी गई है।

Kia Seltos X-Line: इसके केबिन को ब्लैक थीम और सेज ग्रीन अपहोल्स्ट्री दी गई है। इसमें ऑरेंज स्टिचिंग और हेडरेस्ट पर X-Line की एंबॉसिंग की गई है। इसमें पैनोरमिक सनरूफ, ब्लैक हेडलाइनर और कई हाई-टेक फीचर्स भी दिए गए हैं।

6. सुविधाएं और सेफ्टी फीचर्स

Kia Seltos HTE(O): इसमें 6 एयरबैग्स, ESC, ऑल व्हील डिस्क ब्रेक्स, रियर पार्किंग कैमरा जैसे सेफ्टी फीचर्स दिए गए है। इसके अलावा यह वायरलेस Android Auto/Apple CarPlay, मैनुअल AC, 6-स्पीकर साउंड सिस्टम और पावर विंडो जैसी सुविधाओं से लैस है।

Kia Seltos X-Line: इसमें बेस वेरिएंट के सभी सेफ्टी फीचर्स के साथ ADAS भी दिया जाता है, जिसमें लेन कीप असिस्ट, फ्रंट पार्किंग सेंसर, 360-डिग्री कैमरा शामिल है। इसमें डुअल 10.25-इंच डिस्प्ले, वायरलेस चार्जर, डुअल-जोन ऑटो AC, एयर प्यूरीफायर, वेंटिलेटेड फ्रंट सीट्स, 8-स्पीकर Bose साउंड सिस्टम जैसी सुविधाएं भी मिलती है।

7. पावरट्रेन

Kia Seltos HTE(O): इसे 1.5-लीटर नैचुरली एस्पिरेटेड पेट्रोल और 1.5-लीटर डीजल इंजन के साथ पेश किया गया है। दोनों ही इंजन को 6-स्पीड मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ जोड़ा गया है।

Kia Seltos X-Line: इसे 1.5-लीटर टर्बो पेट्रोल इंजन और 1.5-लीटर डीजल इंजन के साथ पेश किया जाता है। इसके पेट्रोल इंजन को 6-स्पीड iMT/ 7-स्पीड DCT और डीजल इंजन को 6-स्पीड मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ जोड़ा गया है।

8. कीमत

Kia Seltos HTE(O): किआ इंडिया इसे 11.13 लाख रुपये से लेकर 12.71 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में पेश किया जाता है।

Kia Seltos X-Line: इसे भारतीय बाजार में 20.51 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में ऑफर किया जाता है। यह HTE(O) वेरिएंट से 9.3 लाख रुपये महंगी है।

कामयाबी के लिए जिम्मेदारी से करें इंटर्नशिप

विजय गर्ग

इंटर्नशिप के द्वारा विद्यार्थी भविष्य में नौकरी के लिए दिए जाने वाले इंटरव्यू के लिए खुद को तैयार कर सकते हैं। उनके लिए यह एक ऐसा माध्यम भी साबित हो सकता है जिससे वे लोगों के साथ अपनी जान-पहचान बढ़ा सकते हैं और भावी कैरियर के लिए बेहतर नेटवर्किंग कर सकते हैं तथा इंटर्नशिप द्वारा प्रोफेशनल रिश्तों को बढ़ा सकते हैं जो आने वाले दिनों में उनके लिए फायदेमंद साबित हो सकती है।

विजय गर्ग

अगर आप सफल कैरियर चाहते हैं तो उसकी शुरुआत पहली नौकरी से नहीं बल्कि पहली इंटर्नशिप से करिये। कैरियर को व्यवस्थित दिशा देने में इंटर्नशिप का बहुत योगदान होता है। इसलिए अपनी पहली इंटर्नशिप को बहुत गंभीरता और सुनियोजित ढंग से करना चाहिए। यह न सिर्फ आपको व्यावहारिक अनुभव देती है बल्कि भविष्य के लिए व्यवस्थित ढंग से तैयार करती है। इसलिए इस बार अपने लिए इंटर्नशिप की प्लानिंग करते समय इस बात पर ध्यान जरूर दें।

इंटर्नशिप का मतलब

मोटे तौरपर इंटर्नशिप का मतलब है- छुट्टियों में किसी कंपनी में 8 से 10 सप्ताह तक काम करना। जहां पर विद्यार्थी अपने आपको काम की असली दुनिया से जोड़ सकते हैं यानी जहां हकीकत में एक ऑफिस होता है, जिसमें किसी की गाइडेंस में या अपने मेंटर के दिशा-निर्देशों में रहकर आप काम के साथ हकीकत में जुड़ सकते हैं। इसके जरिये आपको बहुत कुछ नया सीखने को मिलता है व आमदनी भी होती है। इंटर्नशिप यानी विद्यार्थियों के लिए सीखने, अपना विकास करने और खुद को प्रोफेशनली बेहतर बनाने का मौका। यह पेड या अनपेड, पार्टटाइम या फुलटाइम किसी भी तरह की हो सकती है। इंटर्नशिप के माध्यम से एक प्रोफेशनल एन्वायरमेंट में क्लासरूम में सीखे गए ज्ञान को हकीकत की दुनिया से जोड़कर नए तरीके से सीखा जाता हैं। इंटर्नशिप विद्यार्थियो में नयी स्किल को विकसित करने और उसे कार्यरूप में परिवर्तित करने का माध्यम है। जिसमें कुछ नया सीखने का मकसद तय होता है और इसमें किसी प्रोफेशनल, विशेषज्ञ के सुपरविजन में फीडबैक दी जाती है। इंटर्नशिप के द्वारा विद्यार्थी आने वाले दिनों में अपने कैरियर की सही दिशा समझ सकते हैं। यह उनका किसी इंडस्ट्री, कंपनी या संस्था से परिचय कराता है। इसके माध्यम से वे अपने कैरियर की दिशा को तय कर सकते हैं कि क्या ये वाकई उनके लिए सही है या नहीं। कुल मिलाकर कक्षा में सीखी गई थ्योरी को कार्यरूप में परिवर्तित करने का माध्यम है इंटर्नशिप।

दूर होता है इंटरव्यू का डर

इंटर्नशिप के द्वारा विद्यार्थी भविष्य में नौकरी के लिए दिए जाने वाले इंटरव्यू के लिए खुद को तैयार कर सकते हैं। उनके लिए यह एक ऐसा माध्यम भी साबित हो सकता है जिससे वे लोगों के साथ अपनी जान-पहचान बढ़ा सकते हैं और भावी कैरियर के लिए बेहतर नेटवर्किंग कर सकते हैं तथा इंटर्नशिप द्वारा प्रोफेशनल रिश्तों को बढ़ा सकते हैं जो आने वाले दिनों में उनके लिए फायदेमंद साबित हो सकती है। आमतौर पर छोटे-बड़े संस्थान गर्मियों की छुट्टियों में इंटर्नशिप के लिए विज्ञापन देते हैं और उन्हें ऐसे नयी ऊर्जा से भरपूर युवाओं की तलाश होती है जो उनके कार्यालय के माहौल में कुछ तब्दीली लाएं। इसके द्वारा विभिन्न कंपनियां नये प्रतिभाशाली लोगों को शिक्षित करने, उन्हें प्रशिक्षण देने और उनके प्रोफेशन को आकार देने में उनके लिए सहायक साबित होती हैं।

पहली बार आवेदन करें तो...

जो लोग इंटर्नशिप से पहले परिचित हैं और इससे पहले भी वह इंटर्नशिप कर चुके हैं उनके लिए इसमें एप्लाई करना आसान होता है। वे अपने पुराने संस्थान में दोबारा भी इंटर्नशिप कर सकते हैं। लेकिन जो विद्यार्थी इस पसोपेश में होते हैं कि इसकी शुरुआत कहां से की जाए। ऐसे में यह जानना जरूरी है कि आने वाले दिनों में अपने लिए कौन से कैरियर विकल्प का चुनाव करने वाले हैं और वे किस तरह के विशिष्ट किस्म के काम से जुड़ी गतिविधि से खुद को जोड़कर देखना चाहते हैं। इसके बाद उन्हें कार्यस्थल से जुड़े छोटे-बड़े संस्थानों या कंपनियों में अपने लिए विकल्प तलाश करना होता है। उन्हें इस बात को भी समझना होता है कि अपनी किस स्किल का इस्तेमाल कैसे करें और उसे कैसे विकसित करें।

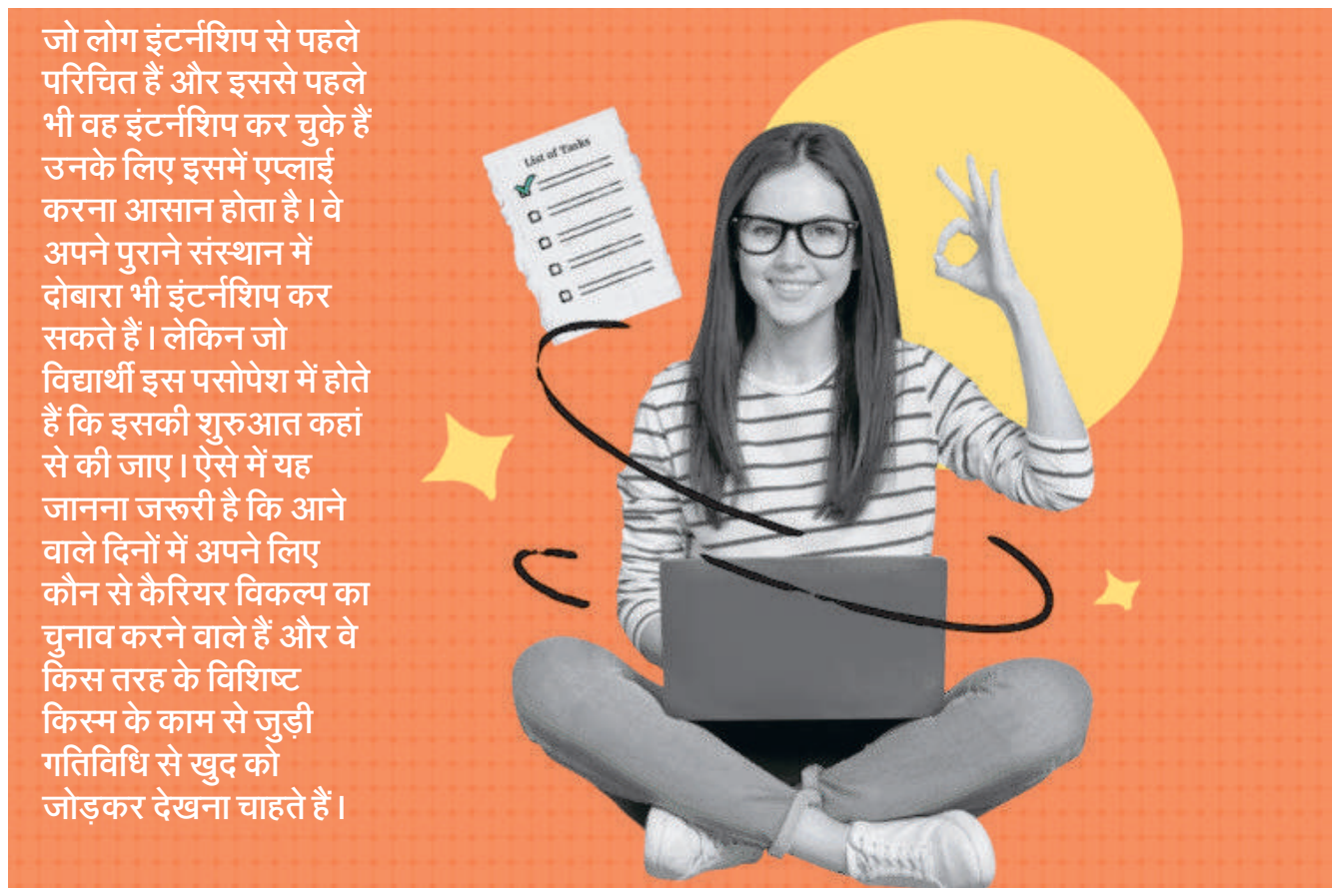

काउंसलर की सलाह

हालांकि इसका चलन कम है, लेकिन जिस तरह हमें किस क्षेत्र में कैरियर बनाएं इसकी सलाह कई बार काउंसलर से लेनी पड़ती है और उसका फायदा भी मिलता है, इसी तरह इंटर्नशिप के लिए भी अगर काउंसलर की सलाह ले ली जाए तो अच्छा ही रहता है कि गर्मी की छुट्टियों में अपने निर्धारित कैरियर के हिसाब से किस तरह की इंटर्नशिप के लिए एप्लाई किया जाए। इसके लिए विभिन्न छोटे बड़े संस्थान विभिन्न अखबारों और वेबसाइट्स पर इंटर्नशिप के लिए विज्ञापन देते हैं। इसके अलावा अपने दोस्तों, परिवार के लोगों की जान-पहचान द्वारा भी कई विद्यार्थी अपने लिए इंटर्नशिप की तलाश करते हैं।

कुल मिलाकर इंटर्नशिप एक ऐसी टेस्ट ड्राइव है जो आपके कैरियर को आगे ले जाती है। यह काम के प्रति आपके लगाव और आपके रुझान को भी चिन्हित करने में मदद करती है और आपको मानसिक रूप से उसी फील्ड में अपना कैरियर बनाने के लिए प्रोत्साहित करती है। इंटर्नशिप के दौरान आप कई ऐसी नयी स्किल्स भी सीखते हैं जो आमतौर पर आपको क्लासरूम के अंदर नहीं सिखायी जाती।

छात्रों को पुस्तकालय से कैसे जोड़ें

विजय गर्ग

एक अच्छी किताब व्यक्ति की सोच को आकार देती है, लेकिन तकनीकी युग में छात्रों में किताबें पढ़ने की प्रवृत्ति बहुत कम हो गई है। हाल के दिनों में विद्यार्थियों का पुस्तकालय जाने का रुझान कम हो गया है। बच्चे पुस्तकालयों में बैठकर किताबें पढ़ते नजर आते हैं। किसी भी बच्चे को साहित्यिक और सांस्कृतिक पुस्तकें पढ़ने में रुचि नहीं है। आजकल के बच्चे घर आने वाला अखबार नहीं पढ़ते। बच्चे अपना अधिकांश समय स्कूल और कॉलेजों में बिताते हैं। आज के तर्क के युग में उनके पास पाठ्यक्रम की पुस्तकें पढ़ने का समय नहीं है। छात्र स्कूल और कॉलेज से घर आते हैं और ट्यूशन जाते हैं। उनके माता-पिता अपनी नौकरी या कामकाज में व्यस्त रहते हैं और वे भी छात्रों को ऐसी गतिविधियों के लिए प्रेरित नहीं करते हैं। बच्चों के लिए नैतिक मूल्यों वाली कहानियाँ और किताबें कौन लाये और उन्हें बच्चों को कौन दे?

आजकल स्कूली बच्चों को थोड़ा भी समय मिलता है तो वे अपने मोबाइल फोन पर वीडियो देखते हैं या गेम खेलते हैं। बच्चों के बिना खाली पुस्तकालयों को देखना बहुत दुखद है। याद रखें कि सुनसान जगह स्थिरता का प्रतिनिधित्व करती है। सक्रिय होना विकास का संकेत है। बच्चे स्कूल-कॉलेजों की लाइब्रेरी में बैठने की बजाय पार्कों और कैंटीनों में बैठे नजर आते हैं। संक्षेप में, अगर हम यह कहें कि शांत पुस्तकालय बच्चों का बेसब्री से इंतजार करते हैं, तो कुछ गलत नहीं होगा। आज के हालात को देखकर ऐसा लगता है कि हमने अपनी विरासत खो दी है। यदि हमारे बच्चे अपनी बुद्धि का विकास नहीं करेंगे तो वे संस्कृति के बारे में कैसे सीखेंगे? हमारे नन्हें बच्चे भविष्य के नेता हैं। ये बच्चे कल के भावी वैज्ञानिक हैं।

हमें मिलकर अपने विद्यार्थियों में साहित्य, बुद्धि, रचनात्मकता, मौलिकता और मूल्यों का विकास करने का संकल्प लेना चाहिए। हम सभी को अपने साहित्य और संस्कृति से जुड़ने और पुस्तकों के माध्यम से अपने जीवन में ज्ञान का प्रकाश लाने की आवश्यकता है। आइए, बच्चों को गुरुमुखी से जोड़ने के लिए इसे पुस्तकालय का हिस्सा बनाएं। आइए हम विद्यार्थियों के ज्ञान अर्जन के लिए पुस्तकालय के दरवाजे खोलें। सरकारों को भी गांवों और शहरों में अधिक से अधिक पुस्तकालय खोलने चाहिए, ताकि विद्यार्थी साहित्य से प्रेरित होकर सर्वांगीण विकास कर सकें। हमें किताबें पढ़ने पर ध्यान देना चाहिए और मोबाइल फोन का उपयोग यथासंभव कम करना चाहिए। यदि विद्यार्थियों को पता चले कि हमारे माता-पिता भी पुस्तकें पढ़ने में रुचि रखते हैं और वे भी मोबाइल फोन का बहुत कम उपयोग करते हैं, ऐसा करके आप अपने बच्चों के लिए एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं, उनके लिए अधिक से अधिक पुस्तकें लाएँ, तथा बच्चों को पुस्तकालय के प्रति जागरूक करने का प्रयास करें ताकि वे पुस्तकालय में रुचि लें और ध्यान दें। ऐसा करके हम छात्रों को पुस्तकालय से जोड़ सकते हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल शैक्षिक स्तंभकार मलोट

प्रेरणादायी मधुमक्खियां : विजय गर्ग

संसार के हर जीव का अपना संसार होता है। हर प्राणी से कुछ न कुछ सीखने को मिलता है। सीखने से पहले जरूरी होता है इनके जीवनवृत्त को समझना। सदियों से इनसान अपने अलावा अन्य जीवों के जीवन चक्र का अध्ययन करता रहा है। अध्ययनों के बाद उनकी एक-एक गतिविधि का मतलब सामने आया है। ऐसे ही मधुमक्खियों के बारे में भी कई बातें सामने आई हैं। बात चाहे रानी मधुमक्खी की हो या फिर मधुमक्खियों के पराग एकत्र करने का मामला। इसके अलावा भी कई रोचक जानकारियां हैं। क्या आप जानते हैं, शाम को फूलों पर बैठी हुई मधुमक्खियां बूढ़ी मधुमक्खिया होती हैं। यानी एक ट्रेंड है कि शाम को बैठी हैं तो वह उम्रदराज हैं। बूढ़ी और बीमार मधुमक्खियां दिन के अंत में छत्ते में वापस नहीं आती हैं। वे रात फूलों पर बिताती हैं, और अगर उन्हें फिर से सूर्योदय देखने का मौका मिलता है, तो वे पराग या अमृत को कॉलोनी में लाकर अपनी गतिविधि फिर से शुरू कर देती हैं।

असल में ऐसा वह क्यों करती हैं। इसका बड़ा दार्शनिक मामला है। दिन के अंत समय में जो मधुमक्खियां फूलों पर बैठती हैं, वे यह महसूस करते हुए ऐसा करती हैं कि अंत निकट है। कोई भी मधुमक्खी छत्ते में मरने का इंतज़ार नहीं करती ताकि दूसरों पर बोझ न पड़े। बोझ क्यों डालना। फूलों में ही समाहित हो जाना है। बच गए तो अगला दिन फिर काम पर निकलेंगे। कितनी बड़ी दार्शनिकता है। तो, अगली बार जब आप रात के करीब आते हुए किसी बूढ़ी छोटी मधुमक्खी को फूल पर बैठे हुए देखें तो मधुमक्खी को उसकी जीवन भर की सेवा के लिए धन्यवाद दें। उसके द्वारा मिली सीख के लिए भी उसे धन्यवाद दें।

मधुमक्खियां आमतौर पर अंडाकार आकार की होती हैं और इनका रंग सुनहरा-पीला और भूरे रंग की पट्टियों वाला होता है। मधुमक्खियां संघ बनाकर रहती हैं और हर संघ में एक रानी, कई सौ नर, और बाकी श्रमिक होते हैं। अनुशासनबद्ध। मधुमक्खियां नृत्य के ज़रिए अपने परिवार के सदस्यों को पहचानती हैं। मधुमक्खियां लीची, कॉफ़ी और कोको जैसे फूलों के परागण में अहम भूमिका निभाती हैं। मधुमक्खियां चीनी की चाशनी खाना पसंद करती हैं। मधुमक्खियां अक्तूबर से दिसंबर के बीच अंडे देती हैं। मधुमक्खियां ज़्यादातर तभी हमला करती हैं जब उन्हें खतरा महसूस होता है। यूं तो यह बात सभी जीवों पर लागू होती है। डर के कारण ही ज्यादातर जीव हमलावर होते हैं। ध्यान रहे इतना सबक देने वाली मधुमक्खियां विषैला डंक भी मारती हैं। उनसे छेड़खानी न करें।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

शिक्षा में प्रतिबद्धता के लिए एक कॉल

विजय गर्ग

शिक्षा में प्रतिबद्धता के लिए एक कॉल उच्च शिक्षा में गुणवत्ता के साथ आंतरिक रूप से प्राथमिक स्तर पर रखी गई एक मजबूत नींव से बंधा हुआ है, वास्तविक परिवर्तन शिक्षकों को सशक्त बनाने और प्रेरित करने और नैतिक शैक्षणिक वातावरण को बढ़ावा देने में निहित है

नई शिक्षा नीति एनईपी - 2020 का सफल कार्यान्वयन हर स्तर पर इसकी कुल स्वीकृति पर निर्भर करता है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण राज्य सरकारें हैं और फिर इसे जमीनी स्तर पर लागू करने वाले। उच्च शिक्षा में उत्कृष्टता और गुणवत्ता का स्तर व्यवस्थित रूप से प्राथमिक विद्यालय स्तर पर प्राप्त गुणवत्ता और उत्कृष्टता पर निर्भर करता है और वरिष्ठ माध्यमिक स्तर तक कायम रहता है। यह सबसे सरल समीकरण है, जो अखाड़े में काम करने वाले सभी लोगों के लिए स्पष्ट है। शिक्षा में, कोई भी शिक्षकों को उत्कृष्टता और नवाचारों की प्राप्ति के लिए सुरक्षित रूप से जिम्मेदार हो सकता है, और पेशेवर स्तर पर और व्यक्तिगत, भावनात्मक और सहानुभूति के स्तर पर उनके और शिक्षार्थी के बीच क्या होता है। यह व्यक्तिगत शिक्षक की कुल प्रतिबद्धता है, जो प्राथमिक विद्यालय से उच्चतम स्तर तक है, जो अकेले ही नीति के उद्देश्य और उद्देश्यपूर्ण कार्यान्वयन में सकारात्मक अंतर लाएगा।

स्कूली शिक्षा के साथ शुरुआत करते हुए, शिक्षा पर गंभीर ध्यान देने के माध्यम से अपने विनाश और अपमान को दूर करने वाले राष्ट्र के उदाहरण को याद करना सार्थक होगा। WWII, तबाह, नष्ट और अपमानित होने के बाद, जापान ने अपने प्राथमिक स्कूलों में शिक्षा को प्राथमिकता देकर और अपने शिक्षकों का सम्मान और समर्थन करके अपना पुनर्निर्माण शुरू किया। अधिकतम सीखने, मस्तिष्क विकास, और बड़े होने का सार वहाँ होता है। यदि कोई बच्चा सभी को समर्पित और प्रतिबद्ध कार्य संस्कृति के साथ देखता है, तो यह देखता है कि समय के अधिकतम उपयोग के लिए कितना मूल्य दिया जाता है, और अपने शिक्षकों को हमेशा प्रेरित आत्मविश्वास से भरा पाता है, राष्ट्र के भविष्य के निर्माता होने पर गर्व करता है, क्या वह कभी भी इन विशेषताओं में से किसी एक को भूल सकता है जब वह अपने समय के दृष्टिकोण के रूप में कुछ असाइनमेंट की बागडोर संभालता है? इसके विपरीत, एक शैक्षिक संस्थान में परिवर्तन के लिए एक अनिच्छुक, असंबद्ध, सुस्त दृष्टिकोण वास्तव में सभी संबंधितों के लिए हानिकारक हो सकता है।

दुर्भाग्य से, हम भारत में बहुत व्यापक पैमाने पर इस तरह के दृष्टिकोण से पीड़ित हैं। यह कई अन्य कारकों द्वारा समर्थित है। कुछ राज्य सरकारें NEP-2020 का विरोध कर रही हैं; उन्होंने शिक्षा की अपनी नीति बनाने के अपने इरादे की घोषणा की है। तकनीकी रूप से, वे ऐसा कर सकते हैं, लेकिन क्या यह राष्ट्र के बड़े कारण, इसकी प्रगति और विकास की सेवा करेगा? क्या यह युवा, संवेदनशील शिक्षार्थियों को उनके सामने सपनों के भार के साथ मदद करेगा? एनईपी-2020 एक अभूतपूर्व परामर्श का एक परिणाम है जिसमें सभी को भाग लेने का मौका मिला।

एकल, एकीकृत और एकजुट राष्ट्रीय इकाई के रूप में आगे बढ़ने की आवश्यकता शिक्षा की तेजी से बदलती दुनिया में एकमात्र विकल्प है, जो केवल

ज्ञान समाज या यहां तक कि एक ज्ञान समाज से बहुत आगे बढ़ रहा है! यह अनुमान लगाना भी आसान नहीं है कि अगले दस वर्षों में शैक्षणिक परिदृश्य का आकार क्या होगा! एक तरफ, आईसीटी नई क्षमता में डालना जो सीखने के अवसरों और विकल्पों को बदल सकता है, और सदियों पुराने शिक्षक की प्रकृति को बहुत प्रभावित करता है - रिश्ते को सिखाया! दूसरी ओर, मानव प्रवास के कारण नई चिंताएं विकसित हो रही हैं, और परिणामस्वरूप जनसांख्यिकीय, सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तन। यह आवश्यक रूप से धर्मों और धर्मों के अलावा शिक्षा, संस्कृति और मातृभाषा से संबंधित संवेदनशीलता को प्रभावित करेगा। एकल-मोडल स्थितियां कई देशों में बहु-मोडल में परिवर्तित हो रही हैं, और इसके लिए इसे संभालने के लिए एक नई रणनीति की आवश्यकता है। ये आसान प्रस्ताव नहीं हैं, जैसा कि कई देशों से उभरती रिपोर्टों से स्पष्ट किया गया है, जिन्हें पहले केवल एक भाषा, अखंड संस्कृति और एक धर्म का अनुभव था! भारत इस संबंध में भाग्यशाली है, लेकिन यह ऐसे मुद्दे बना रहा है जो एक गतिशील शिक्षा नीति के बहुत जरूरी कार्यान्वयन को भी गंभीरता से बाधित कर सकते हैं। यह रॉबर्ट कार्नीरो द्वारा खूबसूरती से व्यक्त किया गया है: ₹वास्तव में, हम संस्कृति की एक नई नस्ल के उद्भव को देख रहे हैं: जो होमो कनेक्टस या कोलेगेटस द्वारा विकसित किया गया है - आधुनिक सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों की तात्कालिकता द्वारा संभव बनाई गई ऑनलाइन नेटवर्किंग की संस्कृति। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि कनेक्टिविटी के प्रारंभिक चरण सीधे होमो इकोनॉमिकस की जरूरतों से जुड़े होते हैं, जिससे उनकी दुनिया में महारत बढ़ती है

यह भी महसूस किया जाए कि नए ज्ञान की खोज की जा रही है और बनाया जा रहा है ज्यादातर विकास, विकास और प्रगति के लिए है। ज्यादातर, यह केवल मन से सर्वश्रेष्ठ को बाहर लाने पर केंद्रित है, पूरी तरह से 'दिल' को अनदेखा करते हुए, तीनों के तालमेल से बाहर जो गांधी ने बहुत पहले प्रस्तावित किया था: सबसे अच्छा 'सिर, हाथ और दिल' से बाहर लाओ! भारत अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं के कारण अन्य दो को अनदेखा नहीं कर सकता है। वास्तविक प्राथमिकताओं को उभरते परिदृश्य के आधार पर समायोजित किया जा सकता है। भारत में अधिकांश युवा अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद नौकरी पाने की इच्छा रखते हैं। वे न तो पर्याप्त कौशल में प्रशिक्षित हैं और न ही रचनात्मकता और अंतर्निहित मानव जिज्ञासा के कौशल के साथ विचारों और कल्पना की शक्ति पर विचार करने के लिए दृष्टिकोण में बदल गए हैं! एक और कारक जो गंभीर विचार-विमर्श का हकदार है, उसे अल्बर्ट आइंस्टीन ने एक सदी पहले बताया था: ₹सबसे महत्वपूर्ण मानव प्रयास हमारे कार्यों में नैतिकता के लिए प्रयास है। हमारा आंतरिक संतुलन और यहां तक कि हमारा अस्तित्व भी इस पर निर्भर करता है

इसके कार्यान्वयन में यह प्रमुख उद्देश्य एनईपी-2020 बनना चाहिए। बहुत अधिक तकनीक और एआई शीघ्र ही इस क्षेत्र में अधिक अवरोध पैदा कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में, ज्ञान विकास की लगभग पूरी प्रक्रिया एक महालोकतांत्रिक समाज के लिए है जो पहले से ही एक बहुत अच्छी तरह से स्थापित राज्य में है, और अपने लिए तेजी से बड़ी जगह पर कब्जा कर रहा है। दोहराने की जरूरत नहीं है, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, भाषाई और धार्मिक कारक हमेशा अपनी उपस्थिति महसूस करेंगे - लेकिन दुख की बात है कि इन्हें संभालना धीरे-धीरे अधिक से अधिक जटिल हो जाएगा, अगर समझदार और संवेदनशील कार्यों को समय पर और अच्छी तरह से शुरू नहीं किया जाता है ईमानदार और नैतिक विचार। एनईपी-202० के कार्यान्वयन को ऐसी विकासशील स्थितियों के लिए सतर्क रहना होगा। शैक्षणिक स्वायत्तता अक्सर कुछ वास्तविक और अनुमानित घुसपैठ का विषय होती है जो शिक्षाविदों को जरूरी नहीं है। यह अंततः विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और अन्य संस्थानों की जिम्मेदारी है कि वे यह तय करें कि वे नीति को कैसे लागू करेंगे, और केंद्रीय और राज्य एजेंसियों द्वारा उन्हें दिए गए संकेतों के साथ सामंजस्य स्थापित करेंगे। प्रत्येक संस्थान की पेशेवर विश्वसनीयता अपने शैक्षणिक संकाय के शैक्षणिक कद और पेशेवर योगदान से निर्धारित होती है।

संकाय सदस्यों को यह याद रखने की आवश्यकता है कि बाहरी कारकों के कारण सार्वजनिक सम्मान और विश्वसनीयता में कोई पेशा कम नहीं होता है - यह हमेशा आंतरिक कारक होता है जो मायने रखता है, और सबसे महत्वपूर्ण नैतिक और नैतिक घटक है, जैसा कि कई उदाहरणों में साबित किया गया है। शैक्षणिक योगदान की गुणवत्ता, नया ज्ञान उत्पन्न, और सुझाए गए नए एप्लिकेशन इसे बहाल करने में बहुत सकारात्मक अंतर बनाते हैं! उच्च पेशेवर मानकों को बनाए रखने के लिए पेशे, मूल्यों और शिक्षार्थियों दोनों के लिए एक गंभीर प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। शिक्षा नीतियों को गतिशील होना चाहिए - अतीत की तुलना में अधिक गतिशील। भविष्य में, परिवर्तन अतीत की तुलना में अधिक बार होंगे।

इसका सबसे महत्वपूर्ण परिणाम शिक्षाविदों द्वारा पेशेवर जिम्मेदारी की बढ़ती स्वीकृति होगी। जिस स्तर पर वे ज्ञान प्रदान करते हैं, ज्ञान बनाते हैं, और नया ज्ञान प्राप्त करते हैं, उसके बावजूद यह उनका व्यक्तिगत और संस्थागत विश्वास है कि 'हम भविष्य की पीढ़ियों और नए भारत के बिल्डरों के निर्माता हैं' जिससे सभी फर्क पड़ेगा। पूर्णता पर निशाना लगाओ, उत्कृष्टता निश्चित रूप से अनुसरण करेगी और दिखाई देगी।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

सत्ता, शहादत और सवाल: जलियांवाला बाग की आज की प्रासंगिकता

जलियांवाला बाग हत्याकांड (1919) केवल ब्रिटिश अत्याचार का प्रतीक नहीं, बल्कि आज के भारत में सत्ता और लोकतंत्र के बीच जटिल रिश्ते का प्रतिबिंब भी है। जनरल डायर द्वारा किए गए नरसंहार ने स्वतंत्रता संग्राम को दिशा दी, लेकिन यह भी सिखाया कि जब सत्ता निरंकुश हो जाए और जनता मौन, तो इतिहास रक्त से लिखा जाता है। अगर लोकतंत्र में विरोध को अपराध बना दिया जाए और सवाल उठाने वालों को दबा दिया जाए, तो हम उसी राह पर हैं जहाँ से जलियांवाला बाग जैसी त्रासदियाँ जन्म लेती हैं। हमें शहादत की स्मृति को ज़िंदा रखना होगा — न केवल श्रद्धांजलि के रूप में, बल्कि सतत चेतावनी और लोकतांत्रिक जिम्मेदारी के रूप में।
जलियांवाला बाग का संदेश आज भी यही है: सत्ता को सवालों से डरना नहीं चाहिए, बल्कि जवाब देना सीखना चाहिए।

डॉ सत्यवान सौरभ

13 अप्रैल 1919, अमृतसर। वैसाखी का दिन। हजारों लोग जलियांवाला बाग में एकत्र हुए थे — कुछ रॉलेट एक्ट के खिलाफ शांतिपूर्ण विरोध के लिए, तो कुछ महज़ त्योहार मनाने। तभी ब्रिटिश सेना के ब्रिगेडियर जनरल रेजिनाल्ड डायर ने अपनी टुकड़ी के साथ प्रवेश किया, बाग के एकमात्र द्वार को बंद कराया, और बिना किसी चेतावनी के भीड़ पर गोलियां चलवा दीं। लगभग दस मिनट में 1650 गोलियां चलाई गईं।

सैकड़ों की जान गई, हजारों घायल हुए। दीवारें खून से लथपथ हो गईं। और भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक निर्णायक मोड़ आया। जलियांवाला बाग हत्याकांड सिर्फ एक ऐतिहासिक त्रासदी नहीं थी, वह साम्राज्यवादी दमन की पराकाष्ठा थी। लेकिन आज, 100 साल से अधिक समय बीत जाने के बाद, हमें खुद से पूछना होगा — क्या जलियांवाला बाग केवल इतिहास की एक दुखद कहानी है, या फिर एक ऐसा आईना है जिसमें आज का लोकतंत्र भी देखा जा सकता है?

जनरल डायर से लेकर आज की सत्ता तक

ब्रिगेडियर जनरल डायर ने इस नरसंहार को "आवश्यक कार्रवाई" बताया था। ब्रिटिश साम्राज्य ने उसे डांटा नहीं, बल्कि कुछ ने तो उसे ₹असली देशभक्त₹ भी कहा। यह घटना हमें यह समझाती है कि जब सत्ता को जवाबदेही से मुक्त कर दिया जाता है, तब वह कितनी क्रूर हो सकती है। आज, जब शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारी किसानों पर लाठीचार्ज होता है, विश्वविद्यालयों में छात्रों को पीटा जाता है, पत्रकारों को जेल में डाला जाता है, और असहमति को "देशद्रोह" का नाम दे दिया जाता है, तब यह सवाल उठता है — क्या सत्ता की वही 'डायर मानसिकता' आज भी जीवित है?

विरोध और लोकतंत्र: एक नाजुक रिश्ता

लोकतंत्र की बुनियाद असहमति पर टिकी होती है। यदि लोग सवाल न करें, आलोचना न करें, और सत्ता से जवाबदेही न मांगें, तो लोकतंत्र धीरे-धीरे एक सत्तावादी ढांचे में तब्दील हो सकता है। जलियांवाला बाग में निहत्थे लोग मारे गए क्योंकि उन्होंने सवाल उठाए थे। आज अगर सवाल उठाने वालों को "राष्ट्रद्रोही" कहा जाता है, तो क्या हमने वाकई इतिहास से कुछ सीखा है? जब सवाल पूछना गुनाह बन जाए, और सत्ता खुद को ₹राष्ट्र₹ घोषित कर दे, तब लोकतंत्र के लिए खतरे की घंटी बजती है।

इतिहास को सजावटी न बनाएं

2021 में जब जलियांवाला बाग स्मारक का नवीनीकरण किया गया, तो उस पर तीखी आलोचना हुई। रंगीन लाइटें, सजावटी गलियारे, डिजिटल शो — सब कुछ जैसे शहादत को ₹इवेंट₹ में बदलने का प्रयास था।

क्या शहीदों की यादें सेल्फी पॉइंट बन जानी चाहिए?

इतिहास का काम केवल गौरव गान नहीं है, उसका उद्देश्य चेतावनी देना भी है। जब हम अपने अतीत के दर्द को केवल उत्सव में बदल देते हैं, तो हम उस चेतावनी को नजरअंदाज कर देते हैं। जलियांवाला बाग का नवीनीकरण एक उदाहरण है कि कैसे हम इतिहास की आत्मा खो सकते हैं, अगर हम केवल उसकी सतह पर सजावट करने लगें।

सत्ता की भाषा बदली है, मंशा नहीं

ब्रिटिश सत्ता ने विरोध को देश के खिलाफ समझा। आज जब हमारे अपने लोकतांत्रिक संस्थान, जनता की आवाज को ₹असहज₹ मानकर दबाते हैं, तो वह भी लोकतंत्र का हनन है। इंटरनेट शटडाउन, मीडिया पर नियंत्रण, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर हमला — ये सब आधुनिक भारत के ₹नरसंहार₹ हैं। फर्क इतना है कि अब बंदूक की जगह डंडा है, और डायर की जगह सिस्टम है। पिछले वर्षों में हुए आंदोलन — जैसे नागरिकता संशोधन कानून के खिलाफ प्रदर्शन, किसान आंदोलन, और विश्वविद्यालयों में छात्रों के आंदोलनों ने यह दिखाया है कि आज भी जब लोग सड़कों पर उतरते हैं, तो सत्ता पहले संवाद नहीं करती, बल्कि बल प्रयोग करती है।

सवाल पूछना अपराध नहीं है

जलियांवाला बाग की घटना हमें यह सिखाती है कि सत्ता को चुनौती देना जनता का अधिकार है। और यह अधिकार लोकतंत्र का आधार है। रवींद्रनाथ टैगोर ने इस हत्याकांड के बाद ब्रिटिश सरकार से 'नाइटहुड' की उपाधि लौटा दी थी। महात्मा गांधी ने इसे असहयोग आंदोलन की प्रेरणा माना। भगत सिंह ने इसे अपनी क्रांतिकारी चेतना का प्रारंभिक क्षण बताया। आज अगर कोई नागरिक सरकार से सवाल पूछता है, तो वह "राष्ट्रद्रोही" क्यों ठहराया जाता है? क्या राष्ट्र वही है जो सत्ता कहे? या राष्ट्र वह है जो नागरिक मिलकर बनाते हैं?

क्या हम इतिहास को दोहरा रहे हैं?

भारत आज विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, लेकिन यह केवल वोट देने से नहीं बनता। यह बनता है पारदर्शिता, उत्तरदायित्व और नागरिक स्वतंत्रताओं से।

जब सरकारें सवालों से डरने लगती हैं, मीडिया पक्षपाती हो जाता है, और अदालतें मौन हो जाती हैं — तब लोकतंत्र का दम घुटने लगता है।

जलियांवाला बाग में जो हुआ, वह इसी मौन और अन्याय का नतीजा था। आज भी, जब कोई पत्रकार सच उजागर करता है और उसे जेल में डाला जाता है, तो वह भी एक तरह का ₹नरसंहार₹ ही है — सत्य का।

हमें क्या करना होगा?

बच्चों को जलियांवाला बाग की कहानी केवल एक अध्याय के रूप में नहीं, बल्कि एक चेतावनी के रूप में पढ़ाई जाए। उन्हें सिखाया जाए कि सवाल पूछना देशभक्ति है, गुनाह नहीं।

हमें असहमति को स्वीकार करना सीखना होगा। अगर कोई नागरिक सरकार की आलोचना करता है, तो उसे देशद्रोही कहना लोकतंत्र की बेइज्जती है। हर सत्ता को यह समझना होगा कि उसका अस्तित्व जनता से है। यदि वह जनता की आवाज को ही दबा दे, तो उसका नैतिक आधार खत्म हो जाता है। जलियांवाला बाग जैसे स्थानों को टूरिस्ट अट्रैक्शन नहीं, राष्ट्रीय चेतना के केंद्र के रूप में संरक्षित किया जाना चाहिए।

शहीदों की चीखें आज भी गूंज रही हैं

जलियांवाला बाग केवल इतिहास का एक काला अध्याय नहीं, बल्कि आज की राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों में प्रासंगिक चेतावनी है। जब तक सत्ता के सामने सवाल उठाने की स्वतंत्रता नहीं होगी, तब तक लोकतंत्र अधूरा रहेगा।

यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम शहीदों की कुर्बानी को केवल दो मिनट के मौन या फूल चढ़ाने तक सीमित न करें। हमें उनका सपना पूरा करना होगा — एक ऐसा भारत जहां सत्ता जवाबदेह हो, नागरिक स्वतंत्र हों, और सवाल पूछना एक अधिकार हो, अपराध नहीं।

जलियांवाला बाग की दीवारें आज भी बोल रही हैं। सवाल यह है कि क्या हम सुन रहे हैं?

सत्ता, शहादत और सवाल

क्यों जलियाँ की चीख सुन, सत्ता है अब मौन?
लाशों से ना सीख ली, अब समझाये कौन॥

डायर केवल नाम था, सोच भरी है आज।
वर्दी बदली, मन वही, वही लहू की लाज॥

सत्य कहे ₹गद्दार₹ हो, चुप रहकर हो ₹भक्त₹।
लोकतंत्र है या यहाँ, जंजीरों का वक्त॥

लूटते भला किसान हो, या छात्र अनुद्रोह।
हर विरोध के माथ पर, लिखा अब देशद्रोह।।

प्रश्न पूछना पाप है, सच कहना अपराध।
सत्ता के इस महल में, नंगे है सब साध॥

वीरों का सम्मान हो, नहीं दिखावा खेल।
बाग वही है, चीख भी, सुन अगर हो मेल॥

मौन साध ले मीडिया, न्याय तजे अब रीत।
तब समझो फिर लौटकर, डायर की है जीत॥

डायर की अब वर्दियाँ, रहीं चमक कर नोच।
जनमत आज कुचल रही, फिर भीतर की सोच॥

वैसा ही मन निर्दयी, पहन वोट का ताज।
फर्क बचा तब क्या यहाँ, ज्यों ब्रिटिश का राज।।

चलती अब भी गोलियाँ, हुई रफ़्तार मन्द।
कभी बैन यूट्यूब है, कभी पत्रकार है बंद॥

लोकतंत्र का ताज है, जनता की आवाज़।
मौन करा के क्या मिला? पलटे तख्तों ताज॥

जलियाँ में जो ना मरे, वे भी मरते आज।
सत्ता के शैतान अब, घोट रहे आवाज़॥

₹अंधभक्त₹ या ₹ट्रोल₹ की, सेना है तैयार।
प्रश्न किया यदि राज पर, देख जेल का द्वार॥

रक्त लिखी जो चेतना, खोती कब आवाज़।
गूंज रही हर ईंट में, सौरभ आहें आज॥

दीवारें जलियाँ कहें, मत करना तू गर्व।
जब तक सच ना गूँजता, रहे अधूरा पर्व॥

डायर चला, जनरल गया, नहीं गई पर सोच?
सत्ता भीरु खा रहे, आज देश को नोच॥

देश न बिके दलाल से, ना नेता की चाल।
देश जिए जब बोल सके, अंतिम किया हलाल॥

जलियाँ वाला एक दिन, बना आग का रूप।
गली गली अब खोजती, वह साहस वह भूप॥

जलियाँ तेरा खून कहे, अब भी है प्रतिबंध।
सूट पहन डायर चला, बोली करता बंद॥

चमक रहा है कैमरा, सच्चाई लाचार।
बस लालच की दौड़ में, बिकाऊ समाचार॥

गूगल कर के देख लो, क्या था सच का भाव।
तुमने तो कर सब दिया, प्रोपेगैंडा का दाव॥

फेसबुक पर श्रद्धांजलि, बड़ा ट्वीट में शोर।
मगर ज़मीं पर आज भी, सत्ता ही है चोर॥

डायर की गोली चली, ₹चार्जशीट₹ अब रीत।
कलम उठाने पर मिले, देशद्रोह की फीत॥

परिभाषा अब ₹राष्ट्र₹ की, सत्ता का हथियार।
चुप रह तो भक्त है, जो बोले गद्दार॥

लाठी से न्याय मिले, ये कैसे कानून।
अदालते जलियाँ बनी, पीती चुप हो खून॥

-डॉ सत्यवान सौरभ

दुनिया को आर्थिक युद्ध में धकेलता अमेरिका

डॉ घनश्याम बादल

इन दिनों विश्व भर के बाजारों पर अमेरिका की नई टैरिफ नीति का भारी प्रभाव दिखाई दे रहा है. आशंकाओं एवं भय का माहौल गर्म है। हालांकि अभी इस टैरिफ नीति के अंतिम परिणाम के बारे में केवल कयास लगाए जा रहे हैं और ठोस आधार पर अधिक नहीं कहा जा सकता है, फिर भी व्यापार विशेषज्ञ, बाजार के धुरंधर, मीडिया विश्लेषक और नेता एवं ब्यूरोक्रेट्स इस नीति का विश्लेषण करने में लगे हैं ।

इस टैरिफ नीति के पूरी तरह लागू होने से पहले ही शेयर बाजार पर इसका जो असर दिखाई दे रहा है वह गहरी चिंता पैदा कर रहा है। यहां एक बात सोचने वाली है कि क्या अमेरिका ने इस नीति के दूरगामी परिणाम का विश्लेषण किए बगैर ही इसे लागू कर दिया या वहां के विशेषज्ञों ने सोच समझकर इस नीति को लागू करने का फैसला किया है भले ही भारत सहित दुनिया के दूसरे देशों को लगे कि यह टैरिफ नीति उनके लिए हानिकारक है और विश्व बाजार पर हानिकारक प्रभाव पड़ेगा एवं वैश्विक युद्ध जैसी स्थिति पैदा हो सकती है अथवा 1904 - 1905 जैसी मंदी का दौर लौट सकता है ।

जैसे सभी देशों को अपने बाजार एवं व्यापार की रक्षा का अधिकार है, वैसा ही अधिकार अमेरिका को भी है और निश्चित रूप से अमेरिका ने अपने घरेलू व्यापार एवं उत्पादों को संरक्षण देने के लिए इस नीति को अपनाने का फैसला किया है। वैसे अमेरिका समय-समय पर आयातित वस्तुओं पर कस्टम ड्यूटी बढ़ाता या घटाता रहा है और इसके पीछे उसकी सोच के मुख्य बिंदु घरेलू उद्योगों की रक्षा , व्यापार घाटा कम करना, रणनीतिक व्यापारिक संतुलन कायम रखना व प्रतिद्वंद्वी देशों पर दबाव बनाना रहे हैं ।

इस टैरिफ नीति के माध्यम से अमेरिका ने कई देशों से आने वाले उत्पादों पर टैरिफ बढ़ा कर संरक्षणवाद की नीति अपनाई है। यहां ध्यान देना चाहिए कि यह वही अमेरिका है जो दुनिया भर में काफी पहले से खुले व्यापार और खुले बाजार की वकालत करता रहा है मगर जब उसे खुद के बाजार पर जरा सा संकट नजर आया तो उसने तुरंत पैंतरा बदल लिया है ।

आर्थिक विशेषज्ञों का मानना है कि वैश्विक व्यापार में टैरिफ बढ़ने से सप्लाई श्रंखला बाधित होगी, उत्पादों की लागत बढ़ेगी, वैश्विक व्यापार धीमा होगा ।ऐसी स्थिति रोकने की जिम्मेदारी विश्व व्यापार संगठन पर है मगर जब अमेरिका जैसे देश एकतरफा टैरिफ लगाते हैं तो डब्ल्यू टी ओ की चुप्पी उसकी प्रासंगिकता एवं निष्पक्षता पर एक बड़ा प्रश्न चिन्ह लगाती है।

यदि अमेरिकी टैरिफ नीति के प्रति उत्तर में भारत, जापान, चीन, यूरोपीय संघ के देश भी जवाबी टैरिफ लगाते हैं तो 'व्यापार युद्ध' की स्थिति बनने के पूरे आसार हैं. इससे न केवल विश्व में तनाव बढ़ेगा अपितु सिर पर विश्व युद्ध का खतरा भी मंडराता नजर आएगा । याद रखना चाहिए कि विश्व युद्ध केवल राजनीतिक कारणों से नहीं होते अपितु उनके पीछे आर्थिक एवं सामाजिक तथा प्रजातीय कारण भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं

इस नीति का भारत पर भी प्रभाव अवश्यंभावी है और काफी लंबे अरसे के बाद अच्छे हुए भारत अमेरिका संबंधों पर भी इसकी काली छाया पड़ सकती है। अमेरिका ने भारत से आयात होने वाले कुछ उत्पादों पर टैरिफ बढ़ाया है जिससे भारत के निर्यातकों पर असर पड़ेगा और अमेरिकी बाजारों में भारतीय उत्पाद काफी महंगे हो जाएंगे जिससे उनकी मांग पर नकारात्मक असर पड़ेगा और इससे भारत की निर्यात आय पर भी असर पढ़ना तय है।

लेकिन हर सिक्के के दो पहलू होते हैं. अमेरिका की इस नीति से भारत को दूरगामी लाभ भी हो सकता है क्योंकि अगर अमेरिका चीन से दूरी बनाता है, तो भारत को अमेरिका में उसके विकल्प के रूप में व्यापार का अवसर मिल सकता है। बौद्धिक संपदा और तकनीकी उत्पादों और डिजिटल व्यापार जैसे क्षेत्रों में सख्ती करता है, जो भारत की आईटी और फार्मा कंपनियों को प्रभावित कर सकता है।

हाथ पैर हाथ रखकर बैठे रहने से कुछ नहीं होने वाला है. इसके लिए भारत को भी रणनीति सोच समझकर तैयार करनी होगी केवल संबंधों या दोनों देशों के प्रमुखों के बीच की मित्रता से बहुत बड़ा फर्क नहीं पड़ने वाला है। अब भारत को केवल अमेरिका पर निर्भर न रहकर अन्य देशों से निर्यात बढ़ाना चाहिए और यूरोप, यूके, और आसियान देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौतों को तेजी से लागू करन घरेलू उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए ₹मेक इन इंडिया₹, उत्पाद आधारित प्रोत्साहन (PLI) जैसे कार्यक्रमों से घरेलू विनिर्माण मज़बूत करना चाहिए ताकि वह वैश्विक वैल्यू चेन में बेहतर भूमिका निभा सके।

अमेरिकी उत्पादों के ऊपर प्रतिस्पर्धात्मक टैरिफ लगाकर भी हम उस पर दबाव बना सकते हैं लेकिन इससे भारत अमेरिका के संबंधों में तनाव होने की आशंका भी रहेगी. इसके लिए बेहतर हो कि अमेरिका के साथ सतत संवाद और समझौतों के माध्यम से अपने हितों की रक्षा करें ।

आज एवं भविष्य के दृष्टिगत उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों और सेवाओं के माध्यम से प्रतिस्पर्धा में टिके रहने के लिए कौशल और नवाचार पर निवेश ज़रूरी है।

यदि भारत भी अमेरिकी उत्पादन पर प्रतिस्पर्धात्मक टैरिफ लागू करता है तो इसके क्या प्रभाव पड़ सकते हैं इस पर भी चिंतन की जरूरत है।

अमेरिका भारत के लिए एक बड़ा न

आईटी सेवाओं, फार्मास्यूटिकल्स, वस्त्र आदि का एक बड़ा बाजार है. जवाबी टैरिफ से अमेरिका को होने वाले निर्यात में कमी आ सकती है जिससे निर्यातकों को नुकसान होगा, उत्पाद महंगे हो जाएंगे और उपभोक्ता के पास विकल्प सीमित होंगे और अमेरिकी कंपनियाँ भी भारत में निवेश करने से हिचकेंगी। ऐसी स्थिति में विदेशी निवेश का घाटा भारत को झेलना होगा मगर यदि अमेरिकी कंपनियां या भारतीय बाजार से हटती हैं तो फिर दूसरे देश भी यहां आने का विकल्प ले सकते हैं. इस घाटे को व्यवहारिक रणनीति के द्वारा काफी कुछ पूरा किया जा सकता है।

यदि अमेरिकी वस्तुएं भारत में महंगी होंगी तो करेंगे तो निर्यात पर फर्क पड़ेगा. ऐसे में भारत को भारत को वैकल्पिक निर्यात बाज़ार खोजने की ज़रूरत पड़ेगी और यूरोप, अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका, वह आसियान देशों का बाजार टटोलना होगा । अमेरिकी वस्तुओं पर टैरिफ लगाने से एक लाभ तो होगा कि प्रतिस्पर्धात्मक तौर से भारत के घरेलू उत्पाद तुलनात्मक रूप से सस्ते हो जाएंगे, जिससे स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा मिलेगा और इलेक्ट्रॉनिक्स, कृषि, खिलौने आदि क्षेत्र का बाजार अधिक तेजी से उभर कर आएगा। लेकिन टैरिफ के कारण आयातित उत्पाद महंगे होंगे, जिससे उपभोक्ताओं के पास सीमित विकल्प रह जाएंगे । इसका असर देश के अंदर मुद्रा स्फीति पर भी पड़ेगा क्योंकि यदि बड़ी संख्या में आयातित वस्तुओं पर शुल्क बढ़ता है तो महँगाई बढ़ेगी और इसका राजनीतिक नुकसान भी वर्तमान सरकार को उठाना पड़ेगा । इस बात की भी आशंका बनी रहेगी कि महंगाई से त्रस्त जनता विपक्ष की ओर न मुड़ जाए । ऐसे में सरकार सभी उत्पादों पर टैरिफ न लगाकर केवल उन पर फोकस करे जिनके घरेलू विकल्प मौजूद हों और डिप्लोमैटिक लचीलापन अपनाते हुए व्यापार रणनीतिक करे ।

स्थानीय बाजार को संरक्षण देने के लिए उद्योगों को सब्सिडी और समर्थन व घरेलू निर्माण और निर्यात को प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए सरकारी सहायता देना भी एक अल्पकालीन विकल्प है और बेहतर हो कि लंबी रणनीति के तहत भारत को वैश्विक उत्पादन नेटवर्क में खुद को स्थापित करना होगा और यह तभी संभव होगा जब हम आंतरिक स्तर पर अपनी कर प्रणाली तथा प्रशासनिक सिस्टम को त्वरित एवं परेशान न करने वाला बनाने में सफल हों ।

परिणाम चाहे जो भी हो, ईनाम देना जरूरी।

"जनता का धन, निजी लाभ : खिलाड़ियों के इनाम पर सवाल"

पदक नहीं मिला, पर ईनाम मिल गया — क्या यह नैतिकता है?

चार करोड़ रुपये — एक बड़ी राशि है। यह पैसा किसी व्यक्तिगत कोष से नहीं आया, बल्कि यह जनता के खून-पसीने की कमाई है। क्या कोई भी सरकार अपनी मर्ज़ी से यह तय कर सकती है कि किसे जनता का पैसा ₹इनाम₹ के नाम पर दिया जाए, वो भी बिना किसी औचित्य के? भारत जैसे देश में, जहां सरकारी स्कूलों की छतें टपकती हैं, अस्पतालों में दवा नहीं मिलती, वहां एक खिलाड़ी को उसकी गलती के बावजूद करोड़ों की राशि देना सामाजिक अन्याय है। इससे यह संदेश जाता है कि नाम और प्रभाव, नैतिकता और ज़िम्मेदारी से ऊपर हैं। जब एक खिलाड़ी अपने कर्तव्य में विफल हो, तो क्या उसे सार्वजनिक धन से पुरस्कृत किया जाना चाहिए? यह घटना केवल व्यक्तिगत नैतिकता पर नहीं, बल्कि सरकारी नीतियों और खेल संस्कृति पर भी सवाल खड़े करती है। यह निर्णय भ्रष्टाचार और नैतिक पतन का प्रतीक है, जो न केवल करदाताओं के पैसों का दुरुपयोग है, बल्कि युवाओं के लिए गलत उदाहरण भी स्थापित करता है। एक खिलाड़ी का आदर्श बनना केवल पदक जीतने से नहीं, बल्कि चरित्र और ज़िम्मेदारी निभाने से तय होता है।

-डॉ. सत्यवान सौरभ

भारत में खेल सिर्फ़ जीत और हार का मामला नहीं होते; वे राष्ट्रीय गौरव, प्रेरणा और जनभावनाओं से जुड़े होते हैं। जब कोई खिलाड़ी ओलंपिक जैसे वैश्विक मंच पर देश का प्रतिनिधित्व करता है, तो वह सिर्फ़ अपनी मेहनत का नहीं, बल्कि पूरे देश की उम्मीदों का भार उठाता है। ऐसे में अगर वही खिलाड़ी न केवल प्रदर्शन में विफल हो, बल्कि नैतिक रूप से भी questionable निर्णय ले — तो यह एक गहरी पीड़ा और चिंता का विषय बन जाता है।

हाल ही में चर्चित पहलवान ने हरियाणा सरकार से ₹4 करोड़ का नकद इनाम स्वीकार किया, जबकि उन्हें पेरिस ओलंपिक 2024 के फाइनल मुकाबले में महज़ 100 ग्राम वज़न ज़्यादा होने के कारण अयोग्य घोषित कर दिया गया था। यह घटना न सिर्फ़ खेल प्रशासनों के लचर प्रबंधन की पोल खोलती है, बल्कि उस खिलाड़ी की नैतिकता पर भी गंभीर सवाल खड़े करती है, जिसे कभी देश की बेटियों की प्रेरणा माना जाता था।

विफलता और इनाम — एक विषम समीकरण

यह बात समझ से परे है कि किसी खिलाड़ी को उसकी सफलता पर पुरस्कार मिलना तो तर्कसंगत है, पर विफलता के बावजूद उसे भारी भरकम सरकारी इनाम क्यों? क्या यह व्यवस्था का ढुलमुलपन नहीं है? क्या यह उसी करदाता के पैसे का दुरुपयोग नहीं, जो दिन-रात मेहनत करता है और जिसका पैसा सरकार के खजाने में जाता है?

चर्चित पहलवान के पास हरियाणा सरकार ने विकल्प दिए थे — सरकारी नौकरी या नकद राशि। उन्होंने बिना झिझक चार करोड़ रुपये की राशि चुनी। यह वही पहलवान हैं, जिन्होंने एक समय खेल में यौन शोषण के विरुद्ध आवाज़ बुलंद की थी। 2023 में उन्होंने बृजभूषण शरण सिंह के ख़िलाफ़ मोर्चा संभाला था और पूरे देश में महिला खिलाड़ियों की सुरक्षा पर बहस छेड़ दी थी। ऐसे में यह उम्मीद करना स्वाभाविक था कि वे केवल नैतिकता की राह पर चलेंगी। लेकिन उन्होंने इस उम्मीद को झुठला दिया।

क्या यह भ्रष्टाचार नहीं?

जब कोई व्यक्ति अपनी विफलता पर भी सरकारी इनाम ले, और वह भी उस इनाम को ₹चुनर₹ कर स्वीकार करे, तो उसे क्या कहा जाए? यह — स्पष्ट शब्दों में — भ्रष्टाचार है। यह उस मानसिकता को दर्शाता है जहां कुछ नामचीन चेहरे व्यवस्था का लाभ उठाने के लिए अपने प्रभाव का इस्तेमाल करते हैं, और जनता मूकदर्शक बनी रहती है।

यह मामला सिर्फ़ चर्चित पहलवान का नहीं है; यह पूरे सिस्टम की एक बड़ी खामी को उजागर करता है। क्या राज्य सरकारों का काम अब ₹भावनात्मक तुष्टिकरण₹ बन गया है? जहां परिणाम चाहे जो भी हों, इनाम देना ज़रूरी हो गया है? इससे न सिर्फ़ खेलों की गरिमा गिरती है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी ग़लत संदेश जाता है।

असफलता की ज़िम्मेदारी कौन ले?

ओलंपिक में प्रतिनिधित्व करना अपने आप में गौरव की बात है, लेकिन 100 ग्राम वजन अधिक होना कोई सामान्य त्रुटि नहीं है। यह एक पेशेवर खिलाड़ी की ज़िम्मेदारी है कि वह फिटनेस, अनुशासन और तैयारी में कोई कसर न छोड़े। जब एक अंतरराष्ट्रीय स्तर की खिलाड़ी ऐसी लापरवाही करती है, तो यह व्यक्तिगत विफलता नहीं, बल्कि पूरे खेल प्रबंधन पर प्रश्नचिन्ह है। और ऐसे में इनाम की बात करना, नैतिक हास्य जैसा प्रतीत होता है।

यह पैसा किसका है?

चार करोड़ रुपये — एक बड़ी राशि है। यह पैसा किसी व्यक्तिगत कोष से नहीं आया, बल्कि यह जनता के खून-पसीने की कमाई है। क्या कोई भी सरकार अपनी मर्ज़ी से यह तय कर सकती है कि किसे जनता का पैसा ₹इनाम₹ के नाम पर दिया जाए, वो भी बिना किसी औचित्य के?

भारत जैसे देश में, जहां सरकारी स्कूलों की छतें टपकती हैं, अस्पतालों में दवा नहीं मिलती, वहां एक खिलाड़ी को उसकी गलती के बावजूद करोड़ों की राशि देना सामाजिक अन्याय है। इससे यह संदेश जाता है कि नाम और प्रभाव, नैतिकता और ज़िम्मेदारी से ऊपर हैं।

एक प्रेरणा से विवाद तक

चर्चित पहलवान परिवार से आती हैं, जिसने महिला खिलाड़ियों की एक पूरी पीढ़ी को प्रेरित किया है। ₹दंगल₹ फिल्म की कहानियों से लेकर उनकी असल ज़िंदगी की लड़ाइयों तक, वह लंबे समय तक एक 'रोल मॉडल' बनी रहीं। पर एक गलत निर्णय वह छवि तोड़ देता है जिसे सालों में बनाया गया हो।

यदि वे वास्तव में सामाजिक सरोकारों के प्रति सजग हैं — जैसा कि उन्होंने अपने आंदोलन में दिखाया था — तो उन्हें यह पैसा विनम्रतापूर्वक लौटाना चाहिए था। या फिर, यदि स्वीकार भी किया, तो उसे किसी खेल फंड या महिला खिलाड़ियों के कल्याण में लगाना चाहिए था।

हमें क्या चाहिए — प्रतिभा या नैतिकता?

इस घटना ने एक बार फिर यह सोचने पर मजबूर किया है कि क्या हमें सिर्फ़ मेडल चाहिए, या चरित्रवान खिलाड़ी भी चाहिए? जब तक खिलाड़ी स्वयं को सिर्फ़ ₹प्रदर्शन आधारित मशीन₹ नहीं, बल्कि समाज का एक नैतिक स्तंभ समझेंगे, तब तक खेलों की आत्मा ज़िंदा रहेगी।

पहलवान को आज introspect करने की ज़रूरत है। क्या वे सिर्फ़ एक कुश्ती की चैंपियन बनना चाहती हैं, या एक ऐसे आदर्श की प्रतीक, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए मिसाल बने? सरकारों को भी अब बंद कमरे में होने वाले ₹इनाम वितरण₹ पर पुनर्विचार करना चाहिए। पारदर्शिता, जवाबदेही और नैतिकता — यही लोकतंत्र और खेलों की असली जीत है।

श्री हनुमान जन्मोत्सव समारोह सम्पन्न महेश्वरम स्थित श्री अभयांजनेय स्वामी देवस्थानम श्री कोदंडा रामालयम जारी प्रेस विज्ञप्ति भोलाराम पंवार ने हनुमान जन्मोत्सव के पावन अवसर पर पवार परिवार की ओर से आयोजित भव्य हनुमान जन्मोत्सव महापर्व में क्षेत्र के लगभग 3000 श्रद्धालुओं ने भक्तिभाव से प्रसाद ग्रहण किया ।सुबह 5 :00 बजे अभिषेक, 7 :00 बजे मंगल आरती, तथा 12 :00 बजे तक प्रसाद वितरण का आयोजन।

मौलाली हाउसिंग बोर्ड में आयोजित श्री हनुमान जन्मोत्सव के दौरान उपस्थित राजस्थानी मारवाड़ी समाज के अध्यक्ष कैलाश शर्मा ,दिनेश विकास शर्मा,सुरेश , नरेश सांखला व अन्य।

जिला शिक्षा विभाग चाईबासा के खिलाफ शिक्षको ने निकाला न्याय यात्रा झारखंड में सरस्वती का मंदिर बना कमीशन खोरी का अड्डा ?

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

चक्रधरपुर ,झारखंड सरकार का शिक्षा विभाग में भ्रष्ट अधिकारियों की अन्तरलिप्तता से इंकार नहीं किया जा सकता ।जिस प्रकार की घटना सरायकेला खरसावां जिले के जिला शिक्षा अधीक्षक के द्वारा नृपराज राजकीय सी एम ऐक्सलेन्सी अफ स्कुलों में हुई थी ठीक उसी प्रकार की घटना अब पश्चिम सिंहभूम जिले में देखने को मिला है ।

यहां प्रधानाध्यापिका के साथ गाली गलौज कर मुर्छित की गयी जबकि पश्चिमी सिंहभूम जिले में जिला शिक्षा अधीक्षक द्वारा एक शिक्षक को थप्पड़ मार कर एफ आई आर तक हुआ है । दोनो ही मामले के गहन अध्ययन हो तो अपने चहेते भेंडरो ,शिक्षको के जरिए गड़बड़ी का चौंकाने वाले तथ्य सामने आने की उम्मीद है ।जो सरस्वती की पवित्र मंदिर को कलंकित करता है ।

जिन बिगत दिनों 27 अप्रैल को जिला शिक्षा पदाधिकारी, पश्चिम सिंहभूम चाईबासा के द्वारा पीएम श्री उच्च विद्यालय रोलाडिह के शिक्षक श्री अजय कुमार महतो के ऊपर अमर्यादित भाषा का प्रयोग करते हुए मारपीट की गई थी । उसके बाद उसे निलंबित कर दिया गया उसके बाद उनपर आदिवासी-हरिजन एक्ट के तहत उन पर कथित फ़र्ज़ी FIR भी दर्ज की गई है । जिला शिक्षा पदाधिकारी के इन कुकृत्यों के खिलाफ जिला के सभी कोटी के शिक्षकों के द्वारा विरोध प्रदर्शन जारी है । इस चरण में आज जिले के प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक एवं प्लस टू शिक्षकों के द्वारा समाहरणालय तक न्याय यात्रा निकाली गइ ।

झारखंड राज्य माध्यमिक शिक्षक संघ, राज्य परिषद के आह्वान के पहले चरण में आज जिले के शिक्षकों के द्वारा न्याय यात्रा निकाली गई एवं माननीय उपायुक्त महोदय की अनुपस्थिति में अपर उपायुक्त, पश्चिम सिंहभूम चाईबासा को माननीय उपायुक्त के नाम स्मार पत्र सौंपा गया । जिसमें पूर्व में 3 अप्रैल को जिले के उपायुक्त को दिए गए प्रतिवेदन का स्मारित कराते हुए यह मांग की गई है, कि शिक्षक श्री महतो को दोष मुक्त करते हुए अबिलंब निलंबन वापस लिया जाए, शिक्षक के ऊपर आदिवासी-हरिजन एक के तहत दर्ज जाली FIR तुरंत वापस ली जाए एवं दोषी पर तुरंत कार्रवाई की जाए ।

न्याय यात्रा में शिक्षकों के द्वारा कार्डबोर्ड के जरिए शिक्षक एकता जिंदाबाद, शिक्षकों पर अत्याचार बंद करो, शिक्षक श्री महतो का निलंबन वापस लिया जाए, जाली FIR वापस ली जाए कि नारे प्रदर्शित किए गए ।

राज्य परिषद के आह्वान पर दूसरे चरण में कल राज्य के सभी जिलों के मूल्यांकन केन्दों मे काला पट्टी लगाकर कल से शुरू हो रहे मैट्रिक और इंटर के परीक्षा कॉपी मूल्यांकन केंद्र में मूल्यांकन के लिए जाएंगे एवं दोपहर में सभी जिले में अपने-अपने जिले के उपायुक्त के माध्यम से माननीय मुख्यमंत्री, झारखंड सरकार, माननीय शिक्षा मंत्री, झारखंड सरकार, माननीय सचिव, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग को ज्ञापन देंगे की शिक्षक श्री महतो को दोष मुक्त करते हुए निलंबन अबिलंब वापस लिया जाए, जाली FIR वापस ली जाए एवं दोषी पर तुरंत कार्रवाई की जाए ।

पश्चिमी सिंहभूम जिले में कल यानि 12 अप्रैल को जिले के सभी कोटी के विद्यालयों प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और प्लस टू विद्यालयों में सभी शिक्षकों के द्वारा काला पट्टी लगाकर विरोध प्रदर्शन किया जाएगा एवं जिले मे दो मूल्यांकन केंद्र बनाई गई है । दोनों ही केन्दों में काला पट्टी लगाकर कलम बंद करते हुए मूल्यांकन कार्य का भी विरोध किया जाएगा । जब तक दोषी पर कार्रवाई नहीं की जाएगी विरोध प्रदर्शन जारी रहेगा । न्याय यात्रा में 160 की संख्या में जिले के सभी कोटि के शिक्षक संघों के सदस्य शामिल हुए ।

पद्मश्री बाप के लेखक पुत्र के किताब को तरहीज नहीं, ओडिय़ पत्रकार की उपेक्षा मामला राज्य स्तरीय छऊ महोत्सव

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला , एक पद्मश्री बाप के पत्रकार बेटे, जिस शख्स का अपना पूर्वजों घर तक कभी इस सबडिवीजनल मजिस्ट्रेट सह पदेन सचिव , छऊ कला केन्द्र सरायकेला का कार्यालय की जमीन रहा । सरायकेला रियासत का स्टेट सचिवालय बनने के पूर्व तक वे राजधानी में सुरक्षाधिकारी हुआ करते थे ।फिर सचिवालय बनने के बाद राजागण अपनी इस निजी संपत्ति को मुफ्त में सरकार को दिए जब बिहार सरकार के पास कार्यालय चलाने के भवन ही नहीं थे । सरायकेला का दरोघा सरनेम यानी ओडिया वीर सपुत खंडायतों की रही है । ओडिया राजबाड़े को इस कौम ने उनकी ढाल तलवारों से इतना महफूज रखा कि दुश्मनों के छटी के दुध याद करा दी । इतना ही नहीं जिनकी तलवारें , सामरिक अखाड़ों की हल चल ही ओडिशा में पाइक कला तो कालान्तर में उत्तर कलिंग में विश्वप्रसिद्ध छऊ नृत्य को जन्म दिया । अगर उसके अगली पीढ़ी में पत्रकार दीपक की लिखी एक छऊ की किताब को लेकर अतिथियों को प्रदान किया जाता तो निसंदेह एक कारगर कदम होता झारखंडी ओड़िआ इतिहास ,कला- संस्कृति लेखक जगत को यथार्थ में मान सम्मान मिल पाता ।पर ऐसा नहीं हुआ सरायकेला महोत्सव में !

हम बात कर रहे हैं 15दिसंबर 1947 को ओडिशा में विलय किये गये सरायकेला देशी रियासत की जिसकी ढाल तलवारें, सामरिक अखाड़ों की देन रही सरायकेला का विश्व प्रसिद्ध छऊ नृत्य वही से श्रृजन हुआ कभी । संभवत सरायकेला छऊ ही एक मात्र सात समंदर पार राजकुमारों के साथ जाने वाला आजादी के पहले की कला रही ,जो ओड़िया भाषा संस्कृति के साथ 1947 को भारतीय अधिराज्य यानी आजका गृह मंत्रालय में विलय हुआ था । तब भी यह उत्कलीय कला था और आज भी है । आज इसकी मौलिकता पर आंच किनके जरिये आ रही यह गृह मंत्रालय के लिए जांच का उम्दा विषय हो सकता है । आज तो सरायकेला से लेकर दिल्ली, मुंबई तक बिचौलिए के कारण इस कला त्राहि त्राहि कर रहा है ।

इस कला को लेकर जिस वरिष्ठ ओडिया पत्रकार दीपक दरोघा ने छऊ एक कहानी नामक पुस्तक की रचना की है जो काबिले तारीफ है। ओडिशा से षड्यंत्र के तहत अलग किये गये माटी के उपजे कला लिए । दीपक एक ओड़िआ पत्रकार है विगत दो दशकों से । उनके पिता पद्मश्री पुरस्कार अलंकृत हैं स्व मकरध्वज दरोघा । आज उनका पत्रकार बेटा जो इस तथ्य को सही ढंग से लिखा है तो उसके किताब को उनसे लेकर अतिथियो को प्रदान किया जाता तो निसंदेह एक नेक उपलब्धि होती ।पर लोगों के चाहने पर भी ऐसा हो नहीं सका ।

झारखंड सरकार के 30-40लाख के महोत्सव आयोजन में स्थानीय ओड़िआ बुद्धिजीवियों के कृतियों पर कितना तरहीज दिया जाता यह जग जाहिर रहा है । झारखंड में ओडिया बुद्धिजीवी सदैव उपेक्षा की श्रेणी में आते है । हां इतना तो जरूर बुद्धिजीवी कभी मुर्ख नहीं होते । सरायकेला का नाम कला से जूड़ा है तो निसंदेह वे नक़ाब होगें ही एक न एक दिन।

मानदेय के लिए मोहन सरकार से मिलेगे झारखंड के ओडिय़ा शिक्षक, शिक्षिका

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सरायकेला , ओडिशा सरकार के द्वारा उत्कल सम्मेलनी के जरिए भाषा बचाने हेतु जारी मुहिम पर विभिन्न विद्यालयों में पदस्थापित ओड़िया शिक्षक शिक्षिकाओं की बैठक नगर पंचायत के पूर्व अध्यक्षा मीनाक्षी पटनायक के आवास में हुई ।

बैठक में उड़िया शिक्षकों की लंबित मानदेय के भुगतान को लेकर उड़िया शिक्षकों में एकजुटता लाने पर बल दिया गया । इस बैठक में विधायक सह पूर्व मुख्यमंत्री चंपई सोरेन के प्रतिनिधि सानंद कुमार आचार्यों ने भाग लिया । उन्होंने उड़िया शिक्षकों की लंबित मानदेय भुगतान को लेकर ठोस पहल करने का आश्वासन दिया है। उन्होंने कहा कि उड़ीसा मुख्यमंत्री से समन्वय स्थापित कर उड़िया शिक्षकों की मानदेय भुगतान का प्रयास किया जाएगा। बैठक में सभी उड़िया शिक्षकों ने 15 अप्रैल के बाद ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर पहुंचकर उड़ीसा के मुख्यमंत्री मोहन चरण मांझी से मुलाकात करने का निर्णय लिया है । उन्होंने सभी शिक्षकों को संगठित रहने को कहा है।

सनद रहे कि सरायकेला पूर्व में ओडिशा का एक राजस्व जिला रहा ओडिशा सरकार ऐन केन प्रकारेण बिहार में इसे लाया था । 1936 में समूचे सिंहभूम को लाकर इस भाषा को समाप्त करने की षड्यंत्र चलाया गया ।तब समुचे सिंहभूम में 350 से भी अधिक ओड़िआ स्कुल हुआ करते थे । आज महज तीन चार ही बचे हुए हैं जो बेहद निराशा जनक है । ऐसी स्थिति में ओडिशा सरकार अपना इलाका मानते हुए झारखंड, छत्तीसगढ़, बंगाल व आंध्रप्रदेश में करीब 600 ओडिया शिक्षक शिक्षिकाओं को मानदेय देकर ओड़िया भाषा में पढ़ाई संचालित कर लोगों की मातृभाषा रक्षा करती आ रही है ।

इस बैठक में उत्कल सम्मेलनी प्रखंड कमेटी के सभापति सुदीप पटनायक भी उपस्थित थे, उन्होंने भी उड़िया शिक्षकों के मानदेय भुगतान के मुद्दे पर सहयोग करने की बात कही है। मौके पर बद्री दारोगा, चिरंजीवी महापात्र, परसु कबि,दुखु साहु एवं सभी उड़िया शिक्षक शिक्षिकाएं उपस्थित थे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023